MHI-03

# इतिहास-लेखन

## पूर्व-आधुनिक परंपराएँ - 1

# 2

''शिक्षा मानव को बन्धनों से मुक्त करती है और आज के युग में तो यह लोकतंत्र की भावना का आधार भी है। जन्म तथा अन्य कारणों से उत्पन्न जाति एवं वर्गगत विषमताओं को दूर करते हुए मनुष्य को इन सबसे ऊपर उठाती है।''

— *इन्दिरा गांधी*



***"Education is a liberating force, and in our age it is also a democratising force, cutting across the barriers of caste and class, smoothing out inequalities imposed by birth and other circumstances."***

**– Indira Gandhi**

इन्दिरा गाँधी
राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ

**MHI-03**
**इतिहास-लेखन**

खंड

# 2

## पूर्व-आधुनिक परंपराएँ –1

**कार्यक्रम संयोजक : प्रो. ए. आर. खान**

**पाठ्यक्रम सम्पादक : प्रो. सब्यसाची भट्टाचार्य**

**पाठ्यक्रम संयोजक : डॉ. शशिभूषण उपाध्याय**

## खंड निर्माण दल

| इकाई संख्या | इकाई लेखक | इग्नू संकाय |
|---|---|---|
| इकाई 5 | डॉ. कुमकुम राय<br>सेंटर फार हिस्टॉरिकल स्टडीज<br>जे.एन.यू., नई दिल्ली | डॉ. शशिभूषण उपाध्याय<br>(संरचना और विषय संपादन) |
| इकाई 6 | डॉ. माधवी थम्पी<br>चीनी और जापानी अध्ययन विभाग<br>दिल्ली विश्वविद्यालय | **अनुवाद :**<br>सुश्री मंजरी जोशी |
| इकाई 7 | डॉ. कुमकुम राय<br>सेंटर फार हिस्टॉरिकल स्टडीज<br>जे.एन.यू., नई दिल्ली | |

| सामग्री निर्माण | आवरण | पांडुलिपि निर्माण |
|---|---|---|
| श्री जितेन्द्र सेठी<br>श्री एस.एस. वेंकटाचलम<br>श्री मंजीत सिंह | ग्रैफिक प्वाइंट<br>नई दिल्ली | श्री प्रतुल वशिष्ठ |



मई, 2006





ISBN-81-266-2410-8





*इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के विषय में और अधिक जानकारी विश्वविद्यालय के कार्यालय, मैदान गढ़ी, नई दिल्ली-110068 से प्राप्त की जा सकती है।*

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से निदेशक, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

"Paper used: Agrobased Environment Friendly"

लेजर कम्पोजिंग : राजश्री कम्प्यूटर्स, V-166A, भगवती विहार, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059

मुद्रक : करन प्रैस, जैड - 41, ओखला फेस - 2, नई दिल्ली — 110020

# खंड 2 पूर्व-आधुनिक परंपराएँ-1

### इतिहास-लेखन क्या है?

यदि इतिहास हमारी ओर से यह समझने का प्रयास है कि अतीत में क्या हुआ तो इतिहास-लेखन यह बताता है कि अतीत में उन लोगों द्वारा ऐसे प्रयास कैसे किए गए होंगे जिन्होंने इतिहास की रचना या तो जबानी की या फिर लिख कर की। इस तरह इतिहास-लेखन इतिहास लिखने का इतिहास है।

यदि आप एक क्षण के लिए सोचें तो आपको यह स्पष्ट हो जाएगा कि लगभग हर व्यक्ति के पास इतिहास का कुछ बोध होता है क्योंकि उसकी स्मृति में जो कुछ अतीत में उसके साथ हुआ या उसको जानने वालों के साथ हुआ दर्ज रहता है। यह स्मृति उस व्यक्ति के साथ क्या हुआ और शायद उसने अन्य लोगों के साथ क्या होते देखा यहीं तक सीमित होती है। जब कोई व्यक्ति इस निजी स्मृति के पार जाता है और सोच-समझ कर यह जानने का प्रयास करता है कि अतीत में केवल कुछ लोगों के साथ ही नहीं बल्कि अन्य समूहों या समुदायों या समाजों के साथ क्या हुआ, तो यही प्रयास इतिहास रचने का प्रयास कहलाता है।

### इतिहास-लेखन का आरंभिक दौर

मानव इतिहास के प्रारंभ में और आज भी ऐसा बहुत सा इतिहास है जो मौखिक है अर्थात लिखा हुआ नहीं बल्कि बोला हुआ है जो कंठस्थ करने के लिए प्रायः कविताओं या गीतों के रूप में निबद्ध है। इस प्रकार भारत में भाट, चारण और कथा-वाचक तथा अन्य लोग भी थे जो अपने श्रोताओं को अतीत के बारे में सुनाते थे। यह एक तरह का इतिहास था। जब कुछ समाजों में इतिहास लिखा जाने लगा तो इसका परिणाम यह हुआ कि इतिहास कुछ अंश तक स्थाई हो गया और उसे अधिक लोगों तक पहुँचाया जाने लगा, क्योंकि लिखे हुए को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पहुँचाया जा सकता है। इस तरह मानवता के सांस्कृतिक इतिहास में इतिहास-लेखन से एक नए चरण की शुरूआत हुई।

खंड 2 की इकाइयों के इस संग्रह में हम तीन प्राचीन सभ्यताओं जैसे भारत, चीन तथा ग्रीको रोमन परंपराओं में इतिहास-लेखन के प्रारंभिक दौर पर नजर डालेंगे। जैसा कि इन इकाइयों के लेखकों ने स्पष्ट किया है, लेखन प्रणाली का विकास धीरे-धीरे हुआ और विभिन्न समाजों में अलग-अलग स्तर तक हुआ, लेकिन यह एक गलत धारणा है कि कुछ समाजों में इतिहास का बोध ही नहीं था। यह कहना अधिक सही होगा कि विभिन्न सांस्कृतिक संरचनाओं में इतिहास की विभिन्न धारणाएँ थी भले ही आधुनिक समय में हम जिसे इतिहास कहते हैं उससे यह धारणाएँ बहुत कुछ मेल न खाती हों।

### ऐतिहासिक पद्धति

इतिहास-लेखन की आम धारा का लक्ष्य कुछ पद्धत्तियाँ और कुछ ज्ञान का भंडार विकसित करना था जिसको आरंभिक तौर पर कुछ परंपरा से और कुछ देख सुन कर निकाला गया। समय के साथ कुछ इतिहासकारों ने — और इन लोगों को अब इतिहास-लेखन का अग्रदूत माना जा रहा है — अपने तथ्यों को सही करने के लिए कुछ पद्धत्तियाँ लागू कीं, जैसे उन्हें अधिकृत स्रोतों से प्राप्त किया और अन्य स्रोतों से उनका मिलान किया। कहीं-कहीं इनमें से कुछ श्रेष्ठ इतिहासकारों ने उस देश या समुदाय जिसमें इतिहासकार आता है, उसके पूर्वाग्रहों से बाहर आने के प्रयत्न भी किए। सारतः प्रामाणिकता की खोज, प्रमाणों की जाँच और पूर्वाग्रह से मुक्त होने का लक्ष्य आज के इतिहासकारों के एजेंडा का हिस्सा है।

# इकाई 5 यूनानी-रोमन परंपरा

इकाई की रूपरेखा



## 5.1 प्रस्तावना

आपमें से शायद कइयों को मालूम होगा कि अंग्रेज़ी शब्द 'हिस्टरी' यूनानी शब्द 'इस्तोरिया' से बना है जिसका अर्थ है पूछताछ या जाँच पड़ताल। हेरोडोटस पहले ज्ञात लेखक हैं जिन्होंने अपने कार्य के वर्णन के लिए इस शब्द का प्रयोग किया। हेरोडोटस को अक्सर इतिहास का जनक माना जाता है। हेरोडोटस और उनके उत्तराधिकारियों द्वारा किए गए कार्यों को अन्य रचनाओं के आकलन के लिए मानदंड माना जाता है। इसलिए हमारे लिए इन कार्यों से संबद्ध कुछ को समझना आवश्यक हो जाता है। इस इकाई में आप प्राचीन यूनान और रोम के कुछ इतिहासकारों तथा उनके द्वारा लिखे गए ऐतिहासिक लेखन के बारे में जानेंगे।

## 5.2 इतिहास-लेखन के संदर्भ

जिन चार इतिहासकारों को हमने अध्ययन के लिए चुना है वे प्राचीन काल के जाने-माने इतिहासकारों में से हैं। इनमें शामिल हैं पाँचवीं सदी ईसा पूर्व के हेरोडोटस और थुसीदीदेस, जिन्होंने यूनानी में लिखा और रोमन साम्राज्य के ऑगस्टन युग के लीवी और टैसिटस (Tacitus) जिन्होंने लातीनी भाषा में लिखा। अक्सर ऐसा माना जाता है कि सामान्य युग से पहले की पाँचवी सदी ने यूनान के इतिहास में सामान्यतः और एथेंस के इतिहास में विशेष रूप से क्लासिकी युग की रचना की जबकि आगस्टस युग को रोमन साम्राज्य के स्वर्णकाल को चिह्नित करने वाला माना जाता है।

इन इतिहासकारों के कार्य इन्हीं राजनीतिक तथा सांस्कृतिक संदर्भों में मिल सकते हैं। फिर भी, इस बात को ध्यान में रखना बेहतर होगा कि इन सदर्भों और ऐतिहासिक पड़ताल के विशिष्ट प्रकारों के बीच कोई सहज सहसंबंध नहीं है। हम यह सोच सकते हैं कि ये इतिहास लेख समकालीन राजनीतिक परिवर्तनों को उचित ठहराने, उनका गुणगान करने या उन्हें वैध करार देने के लिए लिखे गये थे। हालाँकि यह अनुमान पूर्णतया मिथ्या नहीं है पर यह भी स्पष्ट है कि लीवी और टैसिटस अपने समकालीनों के बहुत बड़े आलोचक थे; उनके इतिहास केवल प्रशंसात्मक नहीं हैं बल्कि वर्तमान के प्रति चिंता प्रकट करते हैं।

हेरोडोटस का समय संभवतः 484-425 ईसा पूर्व रहा होगा। इनका जन्म तो एशिया माइनर में एक यूनानी बस्ती में हुआ था लेकिन उन्होंने बहुत दूर-दूर तक यात्राएँ की जैसे फिलीस्तीन तथा बेबीलोन सहित पश्चिम एशिया के इलाकों में, उत्तरी अफ्रीका में विशेषकर मिस्र में, भूमध्य सागर में बसे कई द्वीपों तथा मुख्य भूमि यूनान में। उनका लेखन एथेंस के प्रति गहरी श्रद्धा प्रकट करता है और असल में इनके कुछ लेखन को इस बात की यादगार स्थापित करने के प्रयास के रूप में समझा जा सकता है जिसे वह फारस पर यूनानियों की ऐतिहासिक विजय मानते थे और जो उनकी कल्पना में एक सभ्यता और बर्बरता के बीच युद्ध था।

थुसीदीदेस (460-400 ईसा पूर्व) का एथेंस के साथ संबंध और भी निकट का था। वह एथेंस के ही थे और पेलोपोनीशियन युद्ध के दौरान जनरल थे, हालाँकि जनरल की हैसियत से वह थोड़े-बहुत असफल ही रहे। पेलोपोनीशियन युद्ध एथेंस और स्पार्टा के बीच संघर्ष था जो लगभग तीस वर्षों तक चला। यह ऐसा युद्ध था जिसमें अधिकांश अन्य यूनानी राज्य भी एक दूसरे के समर्थन में उलझ गए थे। जनरल के रूप में असफल होने के बाद थुसीदीदेस को निर्वासित कर दिया गया और उसने कुछ वर्ष उन देशों में बिताए जो एथेंस के विरोधी थे। थुसीदीदेस के कार्य में उसके बहुमूल्य अनुभव की झलक कई तरह से दिखती है।

इस तरह हेरोडोटस और थुसीदीदेस इस समय की देन हैं जिसे अक्सर यूनान के इतिहास में सामान्य तौर पर और एथेंस के इतिहास में विशेष रूप से क्लासिकी युग के रूप में व्यक्त किया जाता है। हमें अन्य सूत्रों से ज्ञात है कि यह समय सुकरात जैसे दार्शनिकों तथा एशीलस, सोफोक्लीस तथा यूरिपिदीस जैसे नाटककारों का समय था। इन इतिहासकारों के अध्ययन हालाँकि प्रत्यक्षतः इस सांस्कृतिक समृद्धि को प्रतिबिम्बित नहीं करते। इसके बजाय हमें, विशेषकर थुसीदीदेस के मामले में, सैन्यवादी गतिविधियों पर ज्यादा जोर है। दरअसल, यदि यह इतिहास विवरणों के मामले में समृद्ध हैं तो यह एक अत्यंत संकुचित दृष्टिकोण भी प्रस्तुत करते हैं। बेशक आज के पाठकों की कई बार इच्छा होती है कि काश इन लेखकों ने अपनी प्रतिभा का इस्तेमाल अधिक व्यापक मुद्दों के लिए किया होता।

जैसा कि हमने देखा साम्राज्य के संदर्भों में लीवी और टैसिटस बहुत निकट थे। रोमन साम्राज्य एक बेजोड़ संस्था थी। इसका विस्तार यूरोप, एशिया और अफ्रीका जैसे तीन महाद्वीपों के क्षेत्रों तक था और यह साम्राज्य लगभग पाँच शताब्दियों तक बना रहा। यह साम्राज्य अपने विशिष्ट शासक वर्ग के लिए भी जाना जाता था जिसकी सदस्यता खासी लचीली थी।

लीवी (64 ईसा पूर्व-17 ईस्वी) रोमन इतिहास की सर्वाधिक प्रसिद्ध हस्ती ऑगस्टस का समकालीन था। हालाँकि वह सीनेट का सदस्य नहीं था और न ही वह राजनीति से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ था। फिर भी, यह शायद केवल संयोग ही नहीं था कि उसने रोम का अत्यंत वृहद इतिहास लिखना पसंद किया जो 142 पुस्तकों में दर्ज है। दुर्भाग्यवश इन पुस्तकों में से सौ से अधिक तो खो गईं और कुछ बाद में लेखकों द्वारा लिखे गये सारांशों में बची रहीं। अपनी संपूर्णता में यह इतिहास-लेखन रोम के पौराणिक इतिहास से लेकर ईसा से पहले 9वीं शताब्दी तक का वृत्तांत समेटे हुए है।

टैसिटस (55-119 ईस्वी) साम्राज्यवादी प्रशासन से निकटता से संबद्ध था और एक जाना-माना वक्ता था। उसके कालवृत्तों में लगभग 50 वर्षों के रोमन साम्राज्य (14-65 ईस्वी) के इतिहास का चित्रण किया गया है। इस काम की शुरुआत होती है ऑगस्टस के शासन के अंत से और इसमें सैन्य तथा प्रशासनिक विशिष्ट वर्गों की उदिग्नता, उत्तराधिकार संबंधी उनकी चिंताएँ और राजनीतिक मामलों में सेना की भूमिका का वर्णन किया गया है। उसके वृतांत की खास बात यह है कि 'भीतरी' व्यक्ति होते हुए भी साम्राज्यवादी नीतियों तथा षडयंत्रों पर उसका रवैया अक्सर आलोचनात्मक होता था। दूसरे शब्दों में इसका लेखन यह बताता है कि रोमन संभ्रांत वर्ग में किसी भी हालत में एकरूपता नहीं थी।

इस स्थिति में हम यह कह सकते हैं कि इन प्रारंभिक इतिहासकारों की चिंताएँ उनके समय के वातावरण से उपजीं थीं और संदर्भ और लेखक के बीच संबंध किसी हालत में सहज या एकरेखीय नहीं थे।

## 5.3 इतिहास-लेखन के उद्देश्य

यह स्पष्ट है कि इतिहास-लेखन स्वबोध विमर्श और स्पष्टतया निश्चित विषयों को लेकर किया गया। इनमें महान और भव्य मानी जाने वाली स्मृतियों को संजोना भी हो सकता था और महत्वपूर्ण घटनाओं का विवरण भी हो सकता था। लगभग अनिवार्य रूप से युद्ध और संग्राम वृत्तांतों में छाए हुए हैं। फिर भी, अन्य उद्देश्य भी स्पष्टतया और कभी-कभी अप्रत्यक्ष तौर पर दिए गए हैं। उदाहरण के लिए हम देखते हैं कि हेरोडोटस ऐसा वृत्तांत प्रस्तुत करते थे जो संपूर्ण, रोचक और आकर्षक भी हो। वे अपने वृत्तांतों में ऐसे नृविज्ञानी हवाले भी देते थे जो अधिकांशतः फंतासी की दुनिया के निकट होते थे। उनके उत्तराधिकारी सामान्यतः अधिक संयमित थे और विशेषकर लातीनी लेखकों ने एक गंभीर नैतिक स्वर अपना लिया था। इसे ऑगस्टस-कालीन विशेषता की तरह भी देखा गया है जहाँ शासक ने अन्य बातों के अलावा अपनी भूमिका को प्राचीन परंपराओं की पुनर्स्थापना के तौर पर भी देखा।

अधिकांश इतिहासकारों ने अपने उद्देश्य पहले ही घोषित कर दिए हैं। उदाहरण के लिए हेरोडोटस अपने लेखन के आरंभ में ही घोषणा करते हैं :

> "यह शोध हैलीकारनासस के हेरोडोटस द्वारा की गई है जिसे उसने इस उम्मीद के साथ प्रकाशित कराया है कि मनुष्यों ने जो कुछ किया है उसकी स्मृति को नष्ट होने से वह बचा सके और ग्रीक और बर्बर लोगों के महान और अद्‌भुत कार्यों को उनकी महिमा खोने से रोक सकें; और यह दर्ज कर सकें कि उनके झगड़ों के कारण क्या थे।"

कुछ हद तक उनका यह आरंभिक कथन उनके निष्कर्ष की कुछ टिप्पणियों से न्यायोचित प्रतीत होता है; ग्रीक लोगों की और विशेषकर एथेंस वासियों की विजय-गाथाओं का उत्सव मनाते हुए और उन्हें दर्ज करते हुए, वह फारसियों और स्पार्टावासियों की वीरता को भी स्वीकार करते हैं।

यह स्पष्ट है कि याद करने योग्य जो कुछ पाया गया वह एक महान युद्ध और उसके परिणाम थे। एक अर्थ में थुसिदीदेस भी इस परिप्रेक्ष्य को मानते हैं जिनका विवरण निम्नलिखित उद्धरण से आरंभ होता है :

> "एथेंसवासी थुसिदीदेस ने पेलोपोनिशयनों और एथेंसवासियों के बीच हुए युद्ध का इतिहास लिखा जो उस पल से आरंभ होता है जब युद्ध छिड़ा और जो इस विश्वास के साथ लिखा गया कि यह एक महान युद्ध होगा और इससे पहले हुए युद्धों की तुलना में कहीं अधिक महत्वपूर्ण होगा।"

युद्ध के इतिहास पर इस प्रकार ध्यान केंद्रित करना लीवी और टैसटिस के लेखनों की विशेषता थी। एक स्तर पर इसमें कोई आश्चर्य नहीं है क्योंकि रोमन साम्राज्य का विस्तार निश्चित तौर पर युद्धों के बल पर हुआ था जिनकी बाकायदा गाथाएँ लिखी गईं। जो सबसे अधिक अप्रत्याशित था वह नैतिकता का वह स्वर था जो इन विवरणों को विशिष्ट बनाता है। हालाँकि हम ऑगस्टन युग को पारंपरिक तौर पर रोमन साम्राज्यवाद का स्वर्णिम काल मानते हैं लेकिन यह रूचिकर है कि उस समय के यह लेखक असहजता का भाव प्रकट करते हैं और वह पीड़ा भी जो राज्य के पतन की संभावना को लेकर उनमें दिखती है। लीवी का प्रारंभिक कथन उसका उदाहरण है :

"मैं पाठकों का ध्यान अपने पूर्वजों के जीवन जैसी गंभीर बात और राजनीति और युद्ध में ऐसे व्यक्ति और साधनों की ओर खींचना चाहता हूँ जिनकी मदद से रोम की सत्ता पहले अर्जित की गई और बाद में उसका विस्तार किया गया। इसके बाद मैं उन्हें हमारे नैतिक पतन की प्रक्रिया खोजने को बाध्य करूँगा जिसमें पहले वह देखेंगे कि कैसे पुरानी शिक्षा को नष्ट होने देने की वजह से नैतिकता की नींव धसकने लगी और कैसे अंततः पूरा भवन ही नष्ट हो गया। वह हमारे आधुनिक दिवस की काली ऊषा भी देख पाएँगे जब न तो हम अपनी बुराइयों को जी पा रहे होंगे और न ही उनका इलाज करने वाली दवाओं का सामना कर पा रहे होंगे।"

किसी अन्य संदर्भ में टैसिटस की रचनाओं में भी सैनिक गतिविधियों से उनका लगाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है फिर भी टैसिटस किसी साधारण तरीके से लड़ाकू नेताओं के महत्व स्थापित करने के प्रयास ही नहीं कर रहे थे बल्कि वह तात्कालिक परिस्थितियों की एक आलोचना भी प्रस्तुत कर रहे थेः

"मेरा उद्देश्य हर घटना का विस्तार से वर्णन करना नहीं बल्कि कुछ उन घटनाओं का वर्णन करना है जो अपनी बदनामी के लिए कुख्यात या उत्कृष्टता के लिए स्पष्ट हैं। मैं इसे इतिहास का सर्वोच्च काम मानता हूँ जिसमें कोई भी अच्छा काम गुमनामी में न रह जाएँ और आने वाली पीढ़ियाँ बुरे शब्दों और कार्यों के बारे में अपनी धारणा बना सकें।"

वह इस बात को लेकर भी बहुत सचेत थे कि जो कुछ उन्होंने दर्ज किया वह निरर्थक लग सकता हैः

"बहुत कुछ जिसका मैंने वर्णन किया है या करूँगा, मैं जानता हूँ कि संभवतः वह दर्ज करने के लिए बहुत नगण्य लगे। लेकिन मेरे इतिवृत्तों की कोई उन लेखकों के लेखन से तुलना न करे जिन्होंने प्राचीन काल के रोम का वर्णन किया है। उन्होंने महान् युद्धों, नगरों पर हमलों, पराजय तथा राजाओं की गिरफ्तारी के बारे में लिखा है और जब भी उन्होंने आंतरिक मामलों को तरजीह दी तो निस्संकोच विषयांतर करते हुए वाणिज्यदूतों के जनरक्षकों से और भूमि तथा अन्न कानूनों पर झगड़े तथा सामान्य जन और अभिजात्य वर्ग के बीच संघर्ष का वर्णन किया। मेरा कार्य सीमाबद्ध और अकीर्तिकर है; शांति पूरी तरह खंडित हो चुकी है या थोड़ी बहुत अशांति है, राजधानी में मनहूस निराशा छाई है, शासक अपने साम्राज्य के विस्तार को लेकर चिंता रहित हैं — यही मेरे विषय हैं। फिर भी पहली नज़र में नगण्य लगने वाली घटनाओं का अध्ययन बेकार नहीं जाएगा क्योंकि इन्हीं से अक्सर बृहत परिवर्तनों के आंदोलन जन्म लेते हैं।"

लीवी और टैसिटस दोनों ने ही अपने लेखन को शिक्षात्मक माना। लीवी का तर्क था किः

"जो मुख्य रूप से इतिहास के अध्ययन को लाभप्रद और हितकर बनाता है वह यह है कि सभी के देखने-समझने के लिए स्पष्ट रूप से इतिहास में हमारे पास मानवीय अनुभवों के असंख्य रूप दर्ज होते हैं और इस दस्तावेज़ में हम अपने लिए और अपने देश के लिए उदाहरण और चेतावनियाँ ढूँढ सकते हैं।"

और कुछ अधिक निराश टैसिटस ने लिखाः

"और अब क्रांति के बाद जब रोम कुछ नहीं रह गया है और केवल एक निरंकुश शासक का राज्य रह गया है तब इस काल को सावधानी से दर्ज करना अच्छा होगा क्योंकि केवल कुछ ही लोग हैं जिनके पास ग़लत और सही की पहचान करने और विवेक तथा हानि में फ़र्क करने की दृष्टि है जबकि अधिकतर लोग

> दूसरों के भाग्य से सीख लेते हैं। यद्यपि यह शिक्षात्मक है लेकिन बहुत कम सुखद है। पाठक के मस्तिष्क को देशों के विवरण, संग्रामों के विभिन्न क़िस्से, महान् सेनापतियों की शानदार मृत्यु के वृतांत बाँध लेते हैं और यादों को तरोताज़ा करते हैं। मुझे लगातार मुकदमों, विश्वसनीय मित्रता, निर्दोष लोगों की तबाही और उन कारणों का वर्णन करना है जिनसे वही परिणाम निकलते हैं। मैं हर जगह अपनी विषयवस्तु में उबाऊएकरूपता का सामना करता हूँ।"

वर्तमान के नीरस बोझ ने ऐसे इतिहासकारों को विलक्षणता के क्षेत्र में कदम रखने से रोका। यह हेरोडोटस के कार्य की तुलना में विपरीत था जो प्रत्यक्षतः हर उस बात से अभिभूत था जो उसे असाधारण लगती थी और इन बातों को उसने बड़ी मेहनत से दर्ज किया बावजूद इसके कि उसे मालूम था कि यह उसकी विश्वसनीयता को हानि पहुँचा सकता है। भारत पर उसके दस्तावेज़, जहाँ वह कभी आया ही नहीं था, विशेष रूप से कल्पना के तत्व प्रकट करते थे जैसे उसकी एक कथा में खोद कर सोना निकालने वाली चींटियों का वर्णन था।

टैसिटस जैसे लेखक अपने दस्तावेज़ों में काल्पनिकता के प्रति कहीं अधिक सतर्क थे। उदाहरण के लिए नीति कथाओं के फ़ीनीक्स नाम के पक्षी पर उनके संक्षिप्त व्यतिक्रम से यह व्यक्त होता है।

> "एक पक्षी जिसे फीनीक्स कहा जाता था कई युगों के एक लंबे दौर के बाद मिस्र में प्रकट हुआ और वहाँ के तथा युनान के विद्वानतम लोगों को आश्चर्यजनक घटनाओं की चर्चा के लिए प्रचुर मात्रा में जानकारियाँ प्रदान कीं। मेरी यह इच्छा है कि उन सभी बातों को मैं सामने लाऊँ जिनके कई पक्षों से वे सहमत थे, भले ही यह पक्ष काफ़ी संदेहास्पद थे लेकिन इतने बेतुके भी नहीं कि उन पर ध्यान न दिया जाए... कितने वर्षों तक यह पक्षी जीवित रहा इस की कई गणनाएँ हैं। आम परंपरा के अनुसार पाँच सौ वर्ष। कुछ लोग मानते हैं कि यह 1461 वर्षों के अंतराल पर प्रकट होता है... लेकिन सभी तरह की प्राचीनता निस्संदेह धुंधली होती है।"

## 5.4 स्त्रोतों की पहचान और उनसे जानकारियाँ प्राप्त करना

प्रमाणों और स्त्रोतों का प्रश्न स्पष्ट और अस्पष्ट दोनों ही रूपों से कुछ लेखनों में व्यक्त किया गया है जिन पर हम विचार कर रहे हैं। प्रत्यक्षदर्शी अवलोकनों को महत्व दिया गया है लेकिन जानकारियों के अन्य स्त्रोतों जैसे धार्मिक केंद्रों, साक्षात्कारों, इतिवृत्तों, परंपराओं और विभिन्न दस्तावेज़ों को भी काम में लाया गया। परस्पर प्रतिकूल विवरणों की संभावना को भी ध्यान में रखा गया और ऐसी स्थितियों के समाधान के लिए उपाय खोजे गए। उदाहरण के लिए फ़ारसी शासक सायरस के इतिहास पर चर्चा करते हुए हेरोडोटस ने कहा कि :

> "और यहाँ मैं उन फ़ारसी विद्वानों का अनुसरण करूँगा जिनका सायरस के कारनामों को अतिरंजित करना नहीं बल्कि मात्र सत्य को वर्णित करना है। इसके अलावा मैं तीन और तरीके जानता हूँ जिनमें सायरस की कहानी सुनाई गई है पर यह सभी मेरे किए गए वर्णन से अलग हैं।"

मकबरों के इर्द-गिर्द मिले अभिलेख और परंपराएँ निश्चय ही महत्वपूर्ण स्त्रोत थे। इसका उत्कृष्ट उदाहरण डेल्फ़ी का मकबरा है जिसके दिव्य वाक्यों या वचनों का युद्ध में जाने जैसी प्रमुख किसी भी घटना से पहले शासक और राज्य हमेशा अनुसरण किया करता था। हेरोडोटस ने इन दिव्य वाक्यों में से कुछ की भविष्यवाणियाँ दर्ज की हैं जो अक्सर संभवतः जानबूझ कर अनेकार्थक भाषा में व्यक्त किए जाते थे। हेरोडोटस ने किसी कार्य के सफलतापूर्वक पूरा होने पर मकबरे पर चढ़ाई गई भेंट का विवरण भी दिया है।

हेरोडोटस पाठक को अपनी कई यात्राओं का आँखों देखा विवरण भी उपलब्ध कराते हैं। यहाँ मेसापोटामिया में कृषि की स्थिति का उनका विवरण दिया जा रहा है :

"हम जितने भी देशों के बारे में जानते हैं उनमें से कोई भी इतना अन्न उपजाऊ देश नहीं है। यह देश अंजीर, जैतून, अंगूर या इसी प्रकार की अन्य किसी पौध को उगाने का बेशक दावा नहीं करता लेकिन अनाज के मामले में यह इतना उपजाऊ है कि यहाँ सामान्य पैदावार दो सौ और कभी-कभी तीन सौ गुना होती है। गेहूँ और जौ के पौधों का फलक चौड़ाई में अक्सर चार अंगुल होता है। जहाँ तक बाजरे और तिल का प्रश्न है तो मैं यह नहीं कहूँगा कि वे किस ऊँचाई तक बढते हैं हालाँकि यह मेरी जानकारी में है; क्योंकि मैं इस बात से अनजान नहीं हूँ कि मैं बेबीलोनिया के उपजाऊपन के बारे में जो कुछ लिख चुका हूँ वह उनको अविश्वसनीय लगे जो कभी इस देश में गए ही नहीं।"

ऐसा ही प्रथमदृष्टया वर्णन फ़ारसियों के अभिवादन के तरीकों के जीवंत विवरण में भी मिलता है :

"जब गलियों में एक-दूसरे से मिलते हैं तो आगे दिए गए संकेत से आप जान जाएंगे कि मिलने वाले क्या समान हैसियत के हैं; यदि वे समान हैसियत के हैं तो बजाए बातचीत करने के वे एक-दूसरे के होठों का चुँबन लेते हैं। यदि एक व्यक्ति दूसरे से ज़रा कम हैसियत वाला है तो चुंबन गालों पर दिया जाता है; जहाँ हैसियत का अंतर ज़्यादा है वहाँ कम हैसियत वाला भूमि पर साष्टांग दंडवत करता है।"

हेरोडोटस ने लोक परंपराओं को भी यदा-कदा स्रोतों की तरह इस्तेमाल किया है। उदाहरण के लिए वह अविश्वसनीय रूप से समृद्ध माने जाने वाले नरेश क्रोएशस और एथेंस के संविधान के संस्थापकों में से एक सोलोन के बीच एक लंबी वार्ता उद्धत करते हैं। इस कथा के अनुसार क्रोएशस आश्वस्त था कि धरती पर वह सबसे अधिक सुखी व्यक्ति है लेकिन सोलोन सौम्यतापूर्वक बार-बार यह कहते हुए आपत्ति प्रकट करता है कि उसे सबसे अधिक सुखी केवल तभी घोषित किया जा सकता है जब उसे उसका अंत ज्ञात हो। इस तर्क से किसी व्यक्ति की मृत्यु के बाद ही कहा जा सकता है कि उसने सुखपूर्वक जीवन व्यतीत किया।

थुसिडिडस अतीत के प्रति अपने रवयै और स्रोतों के बारे में कहीं अधिक सचेत होकर लिखते हैं। वह कहते हैं :

"जिस तरह से अधिकांश लोग परंपराओं को, यहाँ तक कि अपने देश की परंपराओं को भी इस तरह लेते हैं जैसे वह उन तक पहुँचती हैं, उनका तनिक भी आलोचनात्मक परीक्षण किए बिना... गवाँर लोग बिना हिचकिचाहट के उस पहली कहानी को आसानी से स्वीकार कर लेते हैं जो उन्हें सुनाई देती है।"

इसकी तुलना में वह अपनी पद्धति का ज़िक्र करते हैं जो कहीं अधिक कठिन है :

"जो निष्कर्ष मैंने उद्धृत प्रमाणों के आधार पर निकाले हैं उन पर मैं सोचता हूँ कि निर्भर किया जा सकता है। "

निश्चय ही वार्षिक दस्तावेज लिखे जाने की व्यवस्था रोम में शताब्दियों से थी। यह दस्तावेज़ जो *अनाल मकसीमी* कहलाते थे। पादरियों द्वारा संग्रहित और संरक्षित किए जाते थे। इनमें उन न्यायाधीशों के नाम होते थे जो हर वर्ष नियुक्त किए जाते थे और उन घटनाओं का भी हिसाब होता था जो महत्वपूर्ण मानी जाती थीं। इसके अलावा संभ्रांत परिवारों में अंत्येष्टि संभाषणों की प्रथा थी जिसे बाद के इतिहासकारों ने इनमें शामिल किया।

संभवतः पॉलिबियस जैसे प्राचीन इतिहासकारों की ऐसी रचनाएँ और परंपराएँ क्योंकि लिखी जा सकीं थीं इसलिए लीवी और टेसिटस साफ़ तौर पर अपने स्रोतों के लिए कम चिंतित थे।

टैसिटस के उदाहरण में हम देखते हैं कि उनका शासक वर्ग के संदर्भ में भीतरी व्यक्ति होने की हैसियत को लगभग स्वीकार कर लिया गया। फिर भी लिखित और मौखिक स्रोतों के अनियमित संदर्भ मिलते हैं जिन्हें उन्होंने विभिन्न घटनाओं जैसे युद्धों, षड़यंत्रों, सीनेट की कार्यवाहियों, निर्माण गतिविधियों और लोक कार्यवाहियों के विस्तृत इतिहास को दर्ज करने के लिए चुना और बड़ी मेहनत से अपने इतिवृत्तों में लिखा जो साम्राज्य के प्रत्येक वर्ष का लेखा-जोखा थे। थुसीदीदेस की तरह टैसिटस शाही परिवार के कुचक्रों और हत्याओं के बारे में अफ़वाहों का विश्लेषण करते हुए स्पष्टतया उसे नकारते हैं जिसे वह विशेष रूप से अमर्यादित अनुमान मात्र समझते हैं :

"मेरा उद्देश्य .... उन सभी से निवेदन करना है जिनके पास मेरी यह पुस्तक पहुँचेगी कि उस वास्तविक इतिहास की बजाए जो प्रेम गाथाओं में परिणत नहीं हुआ है, निरंकुश और असम्भाव्य अफ़वाहों को उत्सुकता से न लें।"

## 5.5 शैली

जिन लेखकों की बात हम कर रहे हैं उन्होंने स्पष्ट तौर पर संभ्रांत और शिक्षित लोगों के लिए लिखा हालाँकि उनकी कुछ रचनाएँ मौखिक रूप से भी सुनी गई होंगी। वास्तव में प्रत्येक वाक्य बड़ी सावधानी से उत्कृष्ट कौशल के साथ रचा गया था जो अक्सर इनके अनुवादों से भी प्रकट होता है। इस मामले में थुसीदीदेस सबसे अधिक सचेत दिखते हैं। वे संकल्पित गांभीर्य के भाव को अपनाते हैं और पाठक को आगाह करते हैं :

> "निश्चय ही वे न तो अपने कौशल की अति युक्तियाँ प्रदर्शित करने वाले कवि की गाथाओं से और न ही इतिहासकारों की ऐसी रचनाओं से व्याकुल होंगे जो यथार्थ की कीमत पर आकर्षक हैं।"

अक्सर यह गंभीर भाव अनुकरणीय सुस्पष्टता के साथ जुड़ा रहता था। इसका सबसे उत्कृष्ट उदाहरण शायद थुसीदीदेस के प्लेग के सजीव विवरण में दिखता है जिसने युद्ध के दूसरे वर्ष में एथेंस को अपनी चपेट में ले लिया था। आइए देखें कि वह किस तरह रोग के लक्षणों का चित्रण करते हैं:

> "अच्छे भले लोग अचानक ही सिर में भयंकर दर्द और आँखों में सुर्खी और जलन के शिकार होने लगे तथा जीभ और गले जैसे अंदरूनी अंग रुधिराक्त हो गए जिनसे अस्वाभाविक तथा दुर्गंधयुक्त साँस आने लगी।"

लंबे दौर तक चले युद्ध के लिए भी उनका विवरण तीक्ष्ण है :

> "जब शांति और समृद्धि होती है तो देशों और लोगों के मनोभाव अच्छे रहते हैं क्योंकि वे अपने आपको अत्यावश्यक ज़रूरतों का सामना करते हुए नहीं पाते हैं; लेकिन युद्ध रोज़मर्रा की ज़रूरतों की सहज आपूर्ति को छीन लेता है इसलिए एक कठोर नियंता सिद्ध होता है जो अधिकांश लोगों के आचरण को उनकी नियति के समकक्ष ला खड़ा करता है।"

इसके अलावा वह भाषणों को भी जगह देते हैं जिन्हें फ़िनले पाठ का सबसे अधिक रोचक तथा सम्मोहक हिस्सा बताते हैं। यह पढ़ना कौतुहल पैदा करता है कि थुसीदीदेस स्वयं ही इनके बारे में घोषित करते हैं :

> "इस इतिहास में भाषणों के संबंध में देखें तो कुछ भाषण युद्ध शुरू होने के पहले दिए गए थे और अन्य युद्ध के दौरान; कुछ को मैंने स्वयं सुना और अन्य भाषणों के बारे में विभिन्न सूत्रों से ज्ञात हुआ; इन सभी भाषणों में उन्हें शब्दशः स्मृति में रखना कठिन कार्य था *इसलिए मेरी आदत रही है कि मैं वक्ताओं से उन कथनों*

*को बुलवाता हूँ जो मेरी राय में विभिन्न अवसरों पर उनसे अपेक्षित होता था भले ही यह वास्तविक भाषण के सामान्य अर्थ से जितना निकट हो सकता था उतना ही होता था।"*

ऐसे भाषण लेखक कैसे इस्तेमाल करता था इसका खुलासा शायद एक उदाहरण से मिल सके। यह अंश कोरिशियन लोगों के लिए दिए गए एक भाषण से है। कहते हैं कि कोरिन्थियन लोगों ने एथेंसवासियों के विरुद्ध स्पार्टावासियों का समर्थन जीतने की कोशिश की थी। थुसीदीदेस ने इस अवसर का लाभ उठाते हुए एथेंस की विशेषताओं का गुणगान किया :

"एथेंसवासी अभिनव परिवर्तन करने के आदी हैं और उनकी अभिकल्पनाएँ अवधारणाओं और निष्पादन दोनों में ही वेगपूर्ण हैं; तुम्हारे पास जो है उसे सहेजने के लिए तुम्हारे (स्पार्टा लोगों के) पास प्रतिभा है जिसे अविष्कार की सख़्त ज़रूरत है; और जब तुम्हें कार्य करने को कहा जाता है तुम कभी भी अधिक आगे नहीं बढ़ पाए .... इसके अलावा उनकी ओर से तत्परता है जबकि तुम्हारी ओर से विलम्ब, वे कभी घर पर नहीं बैठते और वह अपनी अनुपस्थिति से अपनी दौलत का विस्तार करते हैं, और तुम घर से बाहर नहीं निकलते क्योंकि तुम्हें भय है कि तुम बाहर निकलोगे तो जो पास में है उसे भी खो दोगे।"

लीवी के लेखन की विशेषता भी संक्षिप्त विवरण है। सामान्य लोगों और सिनेटरों के बीच द्वंद्व (494-493 ईसा पूर्व) के उनके विवरण से एक अंश यहाँ दिया जा रहा है :

> "शहर में भयंकर आतंक छाया हुआ था और परस्पर भय के कारण सब कुछ अनिश्चित था। शहर में बचे हुए लोग सीनेटरों की हिंसा की आशंका महसूस कर रहे थे और सिनेटर शहर में बचे हुए लोगों से भयभीत हो रहे थे....।"

और टेसिटस अपने इतिवृत्त में एक सजीव सारांश यह घोषित करते हुए उपलब्ध कराते हैं :

> "मैं इतिहास के उस काल का विवरण दे रहा हूँ जो घोर संकटों से भरा है, अपने युद्धों से भयभीत है, जनसंघर्ष से ग्रस्त है और शांति के दौर में भी संत्रास से परिपूर्ण है।"

## 5.6 ऐतिहासिक घटनाओं और प्रक्रियाओं को समझना

इन प्राचीन इतिहासकारों की सबसे अधिक दिलचस्पी ऐसी घटनाओं के विस्तृत वृत्तांतों को देने में रही जिन्हें वे प्रमुख मानते थे। घटनाओं के अनवरत अनुक्रम में 'क्यों' पर अटकलें लगाने में वे शायद ही कभी रुके हों। घटनाओं के काल और स्थान का तो सावधानीपूर्वक ध्यान रखा गया है लेकिन उसके आगे यह बहुत ही कम पता चलता है कि कोई घटना विशेष क्यों घटी। फिर भी, वृत्तांतों को आकार देने वाले परिपेक्ष्यों को पहचानना संभव है। एक ओर तात्कालिक वातावरण और उसकी राजनीतिक अपेक्षाओं के परे लेखकों ने विभिन्न प्रकार के विचारों पर काम किया जो संभवतः उनके समय के अधिकांश शिक्षित लोगों के मन में थे। कुछ उदाहरणों में भावी घटनाओं के सूचकों के रूप में शकुन-अपशकुन की मान्यता की स्वीकृति के साथ जोड़ कर भाग्य को स्वीकार करना इनमें शामिल था। अन्य लोगों ने मनुष्य के भाग्य में सुनहरे अतीत से एक दीर्घकालिक स्थिर पतन की धारणा को ध्यान में रख कर कार्य किया। लेकिन कुछ अन्य उदाहरणों में हम मानवीय कारणों के महत्व की यदि स्पष्ट नहीं तो अस्पष्ट, मान्यता पाते हैं। कभी-कभार मनुष्य के भाग्य की अस्थिरता की स्वीकृति जैसे स्पष्ट रूप से एक मामूली विचार से तर्कों का ढाँचा तैयार किया गया। जैसे हेरोडोटस के इस वक्तव्य पर गौर करें :

> "जो शहर पहले महान थे उनमें से अधिकांश महत्वहीन हो गए हैं; और जो अब शक्तिशाली हैं, प्राचीन काल में कमज़ोर थे। इसलिए मैं इस बात से आश्वस्त हो कर कि मानव का सौभाग्य देर तक कभी एक जैसा नहीं बना रह सकता, दोनों पर ही निबंध लिखुँगा।"

लक्षणों और संकेतों की इसी से जुड़ी हुई एक धारणा है। हेरोडोटस इस पर विचार करते हैं:

> "ऐसा अक्सर होता है जब किसी देश या राष्ट्र पर कोई बड़ा संकट आने वाला होता है तो कोई न कोई चेतावनी मिल जाती है ....।"

दरअसल अपशकुन और उनके आशय हेरोडोटस के वर्णनों में भरे पड़े हैं। हम केवल एक उदाहरण का ज़िक्र करेंगे। फ़ारसी राजा जेरेक्स जब यूनान की तरफ़ जा रहा था तब उसकी सेनाओं ने एक अद्भुत चीज़ देखी :

> "एक घोड़ी एक खरगोश के साथ प्रकट हुई। मतलब साफ़ था कि जेरेक्स युनान के ख़िलाफ़ अपने मेज़बान को खासी शानशौकत के साथ लाएंगे लेकिन उस जगह पर वापिस पहुँचने के लिए जहाँ से वह चला था, उसे जान बचाने की जद्दोजहद करनी पड़ेगी।"

थुसीडीडस जैसे अन्य लेखकों ने चमत्कारी घटनाएँ देखीं लेकिन उन पर टिप्पणी नहीं की। उदाहरण के लिए वे सिसली में एटना चोटी पर ज्वालामुखी फूटने का ज़िक्र करते हैं लेकिन उस समय की घटनाओं से उसका संबंध स्थापित करने का कोई प्रयास नहीं करते। दैवीय कोप से बचने के लिए भी कहीं-कहीं याचना की कई हैं। जैसे लीवी ने लिखा है कि एपियस नाम के एक व्यक्ति ने कुछ आनुष्ठानिक क्रियाएँ करने के लिए दासों को कैसे निर्देश दिए। वह आगे लिखते हैं:

> "परिणाम को आगे जोड़ कर देखना अद्‌भुत होगा और यह लोगों को धार्मिक पवित्रताओं के पारंपरिक तरीकों से खिलवाड़ करने से रोकेगा; क्योंकि उस समय हालाँकि पोटीशयन परिवार की बारह शाखाएँ थीं, एपियस भी इसी परिवार के थे। इस परिवार में तीस वयस्क थे तिस पर भी सभी अपनी संतानों के साथ एक वर्ष में ही ख़त्म हो गए और इस तरह पोटीटी का नाम ही लुप्त हो गया जबकि नियंत्रक एपियस देवताओं के क्रोध की वजह से कुछ वर्ष बाद अंधा हो गया।"

फिर भी इन लेखकों को मात्र अंधविश्वासी मानते हुए इनकी उपेक्षा कर हम भूल करेंगे। अपनी सभी तरह की विफलताओं और कामयाबियों के साथ मानवीय कारण को भी बाक़ायदा स्वीकार किया गया है। जैसे हेरोडोटस ने माना कि एक दुर्जेय बेड़ा बनाकर फ़ारस के आक्रमण का सामना करने का एथेंस का प्रयास संकटपूर्ण था। वह कहते हैं कि यदि एथेंसवासी इसके बजाय शांति को चुनते तो यूनान का बाकी हिस्सा कभी न कभी फ़ारस के नियंत्रण में आ जाता। उन्होंने लिखा:

> "इसलिए अगर कोई अब यह कहे कि एथेंसवासी यूनान के मुक्तिदाता थे तो वह सत्य से दूर नहीं होगा क्योंकि वास्तव में उनके पास न्याय का तराजू था और वह जिसकी तरफ भी झुकते उसी की जीत होती... और इसलिए देवताओं के बाद वही थे जिन्होंने आक्रमणकारियों को खदेड़ भगाया।"

थुसीदीदेस का अतीत का मूल्यांकन भी रोचक है। वह कहते हैं कि खेतिहर भूमि आक्रमणों के लिए ज्यादा खुली थी और यह भी कि एटिका (वह राज्य जिसकी राजधानी एथेंस थी) आक्रमणों से मुक्त था क्योंकि उसकी भूमि कम उपजाऊ थी और इसीलिए अन्य राज्यों के लोग यहाँ शरण लेने आते थे।

एक अन्य स्तर पर पैलोपोनेशियन युद्ध के उनके विवरण संक्षिप्त और प्रभावी हैं:

> "सही कारण मैं समझता हूँ वह है जिसकी औपचारिक तौर पर सबसे अधिक अनदेखी की गई है। एथेंस में सत्ता का बढ़ना और इसकी वजह से लेसडायमन (वह राज्य जिसकी राजधानी स्पार्टा थी) में पैदा हुई चिंता की वजह से ही युद्ध हुआ।"

टैसिटस यदाकदा ही घटनाओं की क्रमबद्धता से बाहर जाकर व्यापक मुद्दों पर अटकलें लगाते हैं। ऐसी ही एक दुर्लभ परिस्थिति में वह न्यायिक व्यवस्था के स्रोतों को आदिकालीन समरसता की व्यवस्था से अलग कर के देखते हैं:

> "आदिकालीन मनुष्य कुछ समय के लिए एकमात्र बुरे आवेग के बिना, शर्म और अपराध-बोध के बिना जिया और इसके परिणामस्वरूप वह बिना प्रतिबंधों और दंड के जी पाया। पुरस्कारों की आवश्यकता नहीं थी जब हर सही चीज़ को उसके गुणों के आधार पर किया जाना था; और मनुष्य ने नैतिकता के विरुद्ध कुछ चाहा ही नहीं और किसी भी चीज़ के भय की वजह से निषेध नहीं था। लेकिन जब उन्होंने समता को दरकिनार किया और महत्वाकांक्षा एवं हिंसा ने स्वनियत्रंण और शालीनता की जगह ली, तब निरंकुशता बढ़ी और सभी राष्ट्रों में फैल गई। कुछ लोगों ने शुरू से ही या राजाओं से थक कर क़ानून की संहिताओं को अपनाया।"

और बाक़ी जगह वह नियति और मनुष्य के भाग्य पर उसके प्रभाव को लेकर अटकलें लगाते हैं:

> "बेशक, प्राचीन लोगों में से सबसे अधिक बुद्धिमान लोगों और उनके शिष्यों में हम परस्पर विरोधी सिद्धांतों को पाते हैं; कई लोगों की धारणा है कि स्वर्ग का हमारे जीवन के अंत या प्रारंभ से कुछ लेना-देना नहीं है या संक्षेप में, संपूर्ण मानवता से ही कोई लेना-देना नहीं है और इसलिए भले लोगों के लिए निरंतर दुख और दुष्टों को सुख प्राप्त होते हैं; जबकि इसके विपरीत अन्य लोगों का विश्वास है कि नियति और घटनाओं के बीच सामंजस्य होता है लेकिन यह ग्रहों पर नहीं निर्भर करता बल्कि आधारीय तत्वों और प्राकृतिक कारकों के मेल पर निर्भर करता है। फिर भी वे हमें अपना जीवन चुनने की क्षमता यह दावा करते हुए प्रदान करते है कि एक बार चुनाव कर लेने के बाद घटनाओं का क्रम निश्चित हो जाता है।"

## 5.7 सारांश

संभवतः मानवता की एक महत्वपूर्ण तत्व के तौर पर पहचान ही इन आरंभिक इतिहासकारों का स्थाई योगदान है। हम उनके नज़रिये को संकुचित और उनकी चिंताओं को संकीर्ण पा सकते हैं। फिर भी, वह हमें प्रामाणिकता और सत्याभास के सवाल उठाने और उनके हल खोजने के प्राचीनतम उदाहरण उपलब्ध कराते हैं। वह संभावित ऐतिहासिक व्याख्याओं से भी जूझते हैं। हम कुछ विशेष आधारों पर उनसे असहमत हो सकते हैं लेकिन उनकी खोज कई शताब्दियों के बाद भी इतिहासकारों के प्रयासों का अंग हैं।

## 5.8 अभ्यास

1) आपने खंड 1 की इकाई 3 में वस्तुपरकता और व्याख्या पहले ही पढ़ लिया होगा। हेरोडोटस और थुसीदीदेस के लिखे हुए इतिहासों को वस्तुगतता के पैमाने में आप कहाँ रखेंगे?

2) इस इकाई में वर्णित इतिहासकारों के इतिहास-लेखन के क्या उद्देश्य थे?

3) इन इतिहासकारों के इतिहास-लेखन की शैली पर टिप्पणी लिखिए।

## 5.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

ए.एच.एम. जोन्स (सं) *ए हिस्ट्री ऑफ़ रोम थ्रू द फिफ्थ सेंचुरी,* चयनित दस्तावेज़, खंड 1 (द रिपब्लिक) और खंड 2 (द एम्पायर) (न्यूयार्क, हार्पर एंड रो, 1968-70)।

जॉर्ज रॉलिनसन (अनु.) *द हिस्ट्री ऑफ़ हेरोडोटस* (अनुवाद पहले पहल 1858-60 में प्रकाशित हुआ)।

रिचर्ड क्रॉले (अनु.) *थुसिदीदेस : द हिस्ट्री ऑफ़ द पेलोपोनेसियन वार* (1910 में प्रकाशित, 1952 पुनः प्रकाशित)।

एल्फ्रेड ज़ॉन चर्च एंड विलियम जैक्सन ब्रोड्रिब (अनु.) *द एनाल्स एंड द हिस्ट्रीज ऑफ़ टेसिटस* (मॉडर्न लायब्रेरी, 2003)।

एम. आई. फिनले, *एंशिएंट हिस्ट्रीः एविडेन्स एंड मॉडल्स* (लंडन, पेंग्विन, 1985)।

# इकाई 6 पारंपरिक चीनी इतिहास-लेखन

**इकाई की रूपरेखा**





## 6.1 प्रस्तावना

> *'मैंने विश्व की उन प्राचीन परंपराओं को एकत्र किया जो बिखर चुकीं थीं। मैंने इतिहास के दस्तावेज़ों और घटनाओं की जाँच की और उनकी तहकीकात की... मैं स्वर्ग और मानव से संबद्ध उन सभी बातों की जाँच-पड़ताल करना चाहता हूँ मैं भूत और वर्तमान के परिवर्तनों की तह तक जाना चाहता हूँ।''*

ईसा पूर्व पहली शताब्दी में चीन के पहले महत्वपूर्ण इतिहास लेख *शी जी* (ऐतिहासिक दस्तावेज़) के अग्रणी लेखक महान इतिहासकार समा चिएन ने उपर्युक्त बात कही थी। समा चिएन ने चीन में इतिहास-लेखन की परिष्कृत और अटूट परंपरा की शुरुआत की जिसके समान विश्व में थोड़े-बहुत उदाहरण ही हैं। इस परंपरा के बारे में विद्वान डब्ल्यू. टी. बेरी (W.T.Bery) लिखते हैं कि यह "किसी भी समाज के इतिहास का संपूर्ण तथा अटूट दस्तावेज़" प्रस्तुत करता है। चीनी पारंपरिक इतिहास-लेखन के अपने महत्वपूर्ण अध्ययन में चार्ल्स गार्डनर लिखते हैं:

"किसी भी अन्य प्राचीन देश के पास अपने संपूर्ण इतिहास का इतना विशाल, इतना अविरल या इतना सटीक दस्तावेज़ नहीं है।"

इसी तरह से जे.के. फ़ेयरबैंक ने लिखा है कि

"चीनियों के अलावा कोई और अपना इतिहास जानने के लिए अधिक इच्छुक नहीं रहा। अपना अतीत चीनियों के लिए उनके वर्तमान का प्रतिमान था और मानव समाज के बारे में सूचनाओं का प्रामाणिक स्रोत था जिसमें वह सबसे अधिक रुचि लेते थे। किसी और ने इतिहास के मंच पर पात्रों में ढलने की अनुभूति नहीं प्रकट की और न ही किसी और ने अपने ऊपर होने वाले इतिहास के भावी निर्णय में चीनी लोगों से अधिक रुचि ली।"

इतिहास-लेखन चीन की परंपरा का एक अत्यंत महत्वपूर्ण हिस्सा था। यह बहुत निकटता से चीन के पारंपरिक दर्शन शास्त्र, नीतिशास्त्र और शासन कला से जुड़ा हुआ था। चीन की साहित्यिक परंपरा में इतिहास-लेखन के महान दस्तावेज़ भी व्यापक रूप से पढ़े जाते थे और उन्हें सम्मानपूर्वक देखा जाता था।

इस इकाई में हम चीन के इतिहास-लेखन की महान परंपरा के कुछ मुख्य पहलुओं की पड़ताल करेंगे। विशेष रूप से हम उन मुख्य कारणों को जानेंगे जिन्होंने पूर्व-आधुनिक चीन के इतिहास-लेखन को ढाला। हम इतिहास-लेखन की परंपरा में सदियों से होते आ रहे परिवर्तनों और विकास तथा साम्राज्यवादी चीन में इतिहासकारों के बीच होने वाले विमर्श के मुख्य मुद्दों का विश्लेषण करने का प्रयास करेंगे। अंत में, हम इस परंपरा की विशिष्टताओं की जाँच भी करेंगे।

## 6.2 पृष्ठभूमि

इस खंड में हम कन्फ्यूशसवाद पर चर्चा करेंगे जिसने चीनी विद्वानों के बौद्धिक संसार का निर्माण किया और इतिहास के बारे में उनके विचारों को प्रतिपादित करने में मदद की। इनमें से कई विद्वान साम्राज्यवादी चीन में सरकारी कर्मचारी भी रहे हैं।

### 6.2.1 कन्फ्यूशसवाद

कन्फ्यूशसवाद ईसा पूर्व छठी शताब्दी के एक विद्वान और लू नामक चीनी राज्य के गौण सरकारी कर्मचारी कन्फ्यूशस की शिक्षाओं को दिया गया नाम है जिसे बाद की शताब्दियों में उनके अनुयायियों ने आगे बढ़ाया। कन्फ्यूशसवाद सामान्य अर्थों में धर्म नहीं था फिर भी इसने चीनी लोगों की आध्यात्मिक और बौद्धिक परंपराओं तथा उनके सामाजिक और राजनीतिक व्यवहार पर बहुत ही गहरा असर डाला। कई कारणों से हम चीनी इतिहास-लेखन की परंपरा पर कन्फ्यूशसवाद के विशेष रूप से पड़े प्रभावशाली असर की पड़ताल करेंगे।

चीनी परंपरा में इतिहास-लेखन और अध्ययन से जुडे मुख्य महत्व का श्रेय कन्फ्यूशसवाद के कुछ प्रमुख तत्वों को जिया जा सकता है जो इस प्रकार हैं :

- मानवतावाद
- अतीत के लिए सम्मान
- नैतिक शिक्षा पर बल
- सभी बातों के लिए व्यवस्था में दिलचस्पी

आइए इसमें से सभी बातों का कुछ और विस्तार से विचार करें।

**मानवतावादः** इतिहास सबसे पहले मानव और उसकी गतिविधियों, कामकाज का अध्ययन है। कन्फ्यूशस की सांसारिक दृष्टि का मुख्य केंद्र ईश्वर या कोई दैवी शक्ति नहीं बल्कि उसका

मुख्य केंद्र मनुष्य था। मनुष्य अपने संगियों के साथ कैसे संबंध बनाता था, कैसे वह संसार में अपने कामकाज की व्यवस्था करता था और अपने आप में और अन्य लोगों में वह किस प्रकार के मूल्य संस्थापित करता था — यही सब कन्फ़्यूशस और उनके दर्शन का मुख्य सिद्धांत था। मनुष्य की गतिविधियों में गहरी रुचि ने ज़ाहिर तौर पर इतिहास में रुचि के लिए एक सुदृढ़ आधार तैयार किया।

**अतीत के लिए सम्मानः** कन्फ़्यूशस से भी पहले चीन में बीते हुए समय के लिए सम्मान की परंपरा थी जो उनके यहाँ बहुत पहले से पूर्वजों की पूजा के रूप में पाई जाती थी। कन्फ़्यूशस ने हालाँकि इस परंपरा को एक नया दार्शनिक आधार दिया। बढ़ती हुई राजनीतिक अराजकता और परिवर्तनों के समय में रहते हुए कन्फ़्यूशस ने प्राचीन इतिहास को व्यवस्था और कल्याण के स्वर्णिम युग जैसा पाया। वह इस बात से आश्वस्त थे कि इतिहास में नैतिकता, राजनीतिक तथा सामाजिक आचार के उदाहरण ढूँढे जा सकते हैं जो दुर्व्यवस्था और अधोगति को समाप्त करने और समाज में प्राण फूँकने में मददगार होंगे।

**नैतिक शिक्षा पर बलः** कन्फ्यूशसवाद के अनुसार समाज की सुसंगति और कल्याण बनाए रखने के लिए मुख्य रूप से समाता में सच्चे सदाचारी व्यक्तियों की आवश्यकता पड़ती है। हालाँकि कन्फ्यूशसवाद की प्रबल विचारधारा के अनुसार सभी व्यक्ति जन्मजात स्वभाव से अच्छे होते हैं लेकिन असली सदाचारी व्यक्तियों से यह अपेक्षित होता है कि वह शिक्षा के ज़रिये अपने में सही गुणों को सक्रियता से पैदा करें। विभिन्न परिस्थितियों में सही बर्ताव कैसे करें, कैसे फैसला करें कि क्या सही है और क्या गलत — यह सब मुख्यतः शिक्षा और वर्तमान, इतिहास और व्यक्तियों के क्रियाकलापों से उचित सीख लेने से ही जाना-समझा जा सकता है। यह संयोग नहीं है कि सभी पढ़े-लिखे व्यक्तियों से लेकर राजा तक के लिए आवश्यक पाँच ग्रंथों में से दो तत्वतः इतिहास पर थे।

**व्यवस्था में दिलचस्पी :** इतिहास का अध्ययन सामान्यतः केवल मानव की गतिविधियों से ही संबद्ध नहीं है बल्कि यह विशेष रूप से उन व्यवस्थाओं और अर्थों को भी तलाशता है जो मानव समाज में समय के साथ विकसित हुए हैं। जो लोग चीनी इतिहास-लेखन की परंपरा से परिचित हैं वह प्रायः इसमें व्यवस्था तथा वर्गीकरण एवं उन प्रयासों से प्रभावित होते हैं जो कार्य-कारण संबंध समझने और मानव इतिहास के क्रम में बार-बार दोहराए जाने वाले प्रतिमानों को पहचानने के लिए किए गए। इसलिए वर्तमान समय में व्यवस्था बनाने और उसे चलाए रखने के बारे में कन्फ्यूशियस, की चिंता ने अतीत को देखने के तरीके को भी प्रभावित किया।

### 6.2.2 साम्राज्यिक नौकरशाही राज्य

चीन में इतिहास विद्वानों द्वारा लिखा गया था। इसमें कोई असामान्य बात नहीं है लेकिन पारंपरिक चीन के बारे में जो विशिष्टता थी वह यह कि यह सभी विद्वान सरकारी अधिकारी भी थे। चीन विद् एटिएन बालाज़ एक जगह लिखते हैं कि वह इतिहासकार भी जो इतिहास लिखने के समय किसी शासकीय पद पर नहीं थे या तो सेवा निवृत्त अधिकारी थे या अधिकारी पद के इच्छुक थे। वह बालज़ ही थे जिन्होंने सारगर्भिता के साथ चीनी इतिहास-लेखन को "अधिकारियों द्वारा अधिकारियों के लिए" लिखा गया बताया था।

दरअसल इसका अर्थ था कि इतिहास-लेखन ने उस साम्राज्यवादी राज्य के मामलों को प्रदर्शित किया जिनके लिए विद्वान-अधिकारी वर्ग काम करता था। सम्राट और उसके शासन कुल या वंश की वैधता कायम रखना इसका महत्वपूर्ण उद्देश्य था। कन्फ़्यूशसवाद में "नैतिकता से शासन" करने के अर्थ में वास्तव में सम्राट के लिए इतना काफी नहीं था कि वो अपने राज करने के अधिकार को अपने सत्ता में होने के तथ्य पर आधारित करे। कोई सम्राट या राज शाही सत्ता में कैसे भी आई हो, उन्हें अपनी सत्ता को हर वक्त कन्फ़्यूशसवाद के कुछ सुव्यवस्थित

नियमों और परिपाटियों के अनुसार तर्कसंगत सिद्ध करते रहने की आवश्यकता होती थी। इसलिए पिछली राजशाहियों या पिछले शासकों के इतिहास को इस तरह लिखना जिसमें वर्तमान शासक और उसके परिवार की प्रतिष्ठा बढ़े और आने वाले समय में उसकी महिमा सुनिश्चित हो सके इतिहासकारों के लिए एक अहं मुद्दा था। इतिहास के मुख्य ग्रंथ प्रायः शासकों द्वारा या तो प्रायोजित किए जाते थे या अधिकृत होते थे।

वर्तमान शासकों के पक्ष में इस पूर्वाग्रह के बावजूद बालाज़ के अनुसार चीनी इतिहास-लेखन "अक्सर विषय निष्ठता का अंश प्रदर्शित करता था जो कि उन परिस्थितियों में असाधारण बात थी।" ग्यारहवीं शताब्दी के एक महान इतिहास ग्रंथ 'जीझी तौंग्जिएन' में दर्ज निम्नलिखित किस्सा यह बताता है कि यदि अधिकारी इतिहास लेखक दृढ़-निश्चयी होते थे तो वह अपने निर्णय की स्वतंत्रता कायम रखने के लिए किसी भी हद तक जा सकते थे :

"तांग राजवंशी सम्राट ताइ-त्सुंग ने शाही संवाद नियंत्रक चू सुइ-लियांग से पूछा, "क्योंकि आप कार्यवाहियों की दैनिकी (अर्थात् सम्राट की गतिविधियों पर दरबारी इतिहासकारों की संपादित टिप्पणियाँ) की देख-रेख करते हैं इसलिए क्या मैं देख सकता हूँ कि आपने क्या लिखा है?" सुइ-लियांग ने उत्तर दिया, "इतिहास लेखक शासक और उसके आदमियों के कथन और कार्य, अच्छे और बुरे, इस उम्मीद के साथ दर्ज करते हैं कि सम्राट कुछ अनिष्ट करने का साहस नहीं करेगा। लेकिन यह तो नहीं सुना कि सम्राट खुद देखे कि क्या लिखा गया है।" सम्राट ने कहा, "यदि मैं कुछ ऐसा करूँ जो अच्छा न हो, तब भी आप उसे दर्ज करेंगे?" सुइ-लियांग ने कहा, "मेरा कर्तव्य कलम सँभालना है। मैं दर्ज क्यों नहीं करूँगा?" पीली घाटी के दरबारियों में से एक लिउ ची ने कहा, "यदि सुइ-लियांग न भी लिख सके तो साम्राज्य में हरेक उसे दर्ज करेगा।" इस पर सम्राट का उत्तर थाः बिल्कुल सही है।"

यह लेखांश इतिहासकारों की एक और चिंता को दर्शाता है और वह यह है कि शासक और अधिकारियों दोनों को उनकी ज़िम्मेदारियों को वहन करने के लिए ज़रूरी सूचनाएँ उपलब्ध करा कर और पिछले अनुभवों से सबक लेकर उन्हें कैसे सिखाया जाए। जिस इतिहास ग्रंथ से यह गद्यांश लिया गया है उसके नाम का अर्थ ही "शासन की मदद के लिए बोध दर्पण" है। परवर्ती साम्राज्यवादी काल में जैसे-जैसे राज्य की चिंताओं के क्षेत्र बढ़े, वैसे-वैसे विभिन्न मामले इतिहासकारों की कलम के योग्य बनते गए। यही कारण है कि बाद में लिखे गए कई इतिहास ग्रंथ आकार और विषय के मामले में अति व्यापक थे।

## 6.3 इतिहास-लेखन की परंपरा का विकास

अब हम आधुनिक काल के पहले के चीन में सदियों से किए जा रहे इतिहास-लेखन की परंपरा के विकास का अध्ययन करेंगे।

### 6.3.1 इतिहास वृत्त

चीनी शब्द '*शी*', जो इतिहास के अर्थ में जाना गया, मूल रूप से खगोल विज्ञानी घटनाएँ या शासकों के लिए अन्य महत्वपूर्ण जानकारियाँ लिखने वाले दरबारी लिपिकों के लिए प्रयुक्त होता था। इतिहास के प्राचीनतम दस्तावेज़ों में ऐसे लिपिकों द्वारा लिखे गए दरबारी गतिविधियों के संक्षिप्त कालक्रमिक विवरण दर्ज होते थे। इन्हें काल वृत्त कहा जाता था। इनका समय (अनुमानतः 8वीं से तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व) पूर्वी झाओ काल से है। मौजूदा प्राचीनतम उदाहरण लू के राज्य से है जहाँ का रहने वाला कन्फ्यूशस था। काल वृत्तों में अपनाई गई लेखन शैली अत्यधिक संक्षिप्त थी जिसमें मुख्य घटनाओं का उल्लेख भर था। उदाहरण के लिए 715 ई. पू. में एक वर्ण या शब्द 'महामारी' की एक ही प्रविष्टि थी। काल वृत्तों को आधार बना कर इतिहासकारों ने प्रत्येक शासक के शासन काल का पूरा ब्योरा संकलित किया जिसे

'सच्चे विवरण' कहा गया। चीन के अधिकांश इतिहास को लगातार काफ़ी अच्छी तरह से सँजोए रखने वाले यह 'सच्चे विवरण' ऐतिहासिक जानकारियों के बहुमूल्य और विश्वसनीय स्रोत हैं।

### 6.3.2 समा चिएन के ऐतिहासिक दस्तावेज़ (शी जी)

इसमें कोई शक नहीं कि समा चिएन पूर्व-आधुनिक काल में चीन के महानतम इतिहासकार थे जिन्होंने प्राचीन हान राजवंश काल में अपने लीक तोड़ने वाले 'ऐतिहासिक दस्तावेज़' (शी जी) लिखे। समा चिएन पहले लेखक थे जिन्होंने काल वृत्त के प्रारूप की सीमाएँ तोड़ते हुए प्राचीन कालीन चीन से लेकर अपने समय तक का व्यापक इतिहास लिखा। इसके अतिरिक्त उन्होंने इतिहास ग्रंथों का एक प्रारूप भी तय किया जिसे आधुनिक काल के इतिहासकारों तक ने अपनाया। इसे 'काल वृत्त', 'प्रबंध' और 'जीवन चरित' प्रारूप की संज्ञा दी जा सकती है।

दरअसल ऐतिहासिक दस्तावेज़ों का पाँच भागों वाला एक जटिल रूप था लेकिन जो दो मुख्य अभिनव परिवर्तन समा चिएन ने किए। उनमें प्रबंधों या प्रासंगिक विषयों पर निबंधों का एक खंड और जीवनियों का दूसरा खंड शामिल होता था। प्रबंध खंड में धार्मिक अनुष्ठान और संगीत, ज्योतिष और खगोल शास्त्र, पंचांग, नदी और नहरें तथा 'मापतौल' (जो दरअसल अर्थ व्यवस्था पर निबंध होते थे) जैसे विषय शामिल किए जाते थे। परवर्ती शताब्दियों में प्रबंध खंडों में धीरे-धीरे कुछ गूढ विषयों जैसे धार्मिक अनुष्ठान, धर्म विधि, ज्योतिष आदि की जगह प्रशासकों के लिए अधिक व्यावहारिक महत्व के विषय जैसे कानून, प्रशासन, यातायात और जल-कल आदि शामिल होने लगे। फिर भी, प्रबंधों का स्थान लगभग हर इतिहास ग्रंथ में महत्वपूर्ण ही रहा।

समा चिएन ने जीवन चरितों पर एक खंड भी शामिल किया जिसमें केवल विशिष्ट लोगों का ही नहीं बल्कि कई प्रकार के लोगों का उल्लेख होता था जैसे 'ईमानदार अधिकारी', 'तानाशाह अधिकारी', 'पवित्र विधवाएँ आदि। इतिहास ग्रंथों में यही वह खंड था जिसमें विदेशी लोगों का उल्लेख भी मिलता है।

केवल संरचना ही नहीं बल्कि समा चिएन द्वारा प्रयुक्त पद्धति को भी बाद के इतिहासकारों ने काफी हद तक अपनाया। उन्होंने निष्ठापूर्वक ऐसे पाठों को, जिन पर वह भरोसा करते थे, जस का तस प्रस्तुत करने का दस्तूर शुरू किया। जहाँ उसी विषय या घटना के कई विवरण मिलते थे या भिन्न विवरण मिलते थे, वहाँ पाठक को उनकी प्रासंगिकता और विश्वसनीयता पर निर्णय लेने के लिए वह उन सभी को प्रस्तुत कर देते थे।

उन्होंने इतिहास-लेखन की औपचारिकता और दृढ शैली को छोड़ अपनी जीवंत शैली अपनाई। उनके बाद अगले महान इतिहासकार वान गु ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके बारे में कुछ इस तरह कहाः

> "वह प्रवचन करते हैं पर शब्दाडंबर के बिना; वह सहज हैं पर अनगढ़ भी नहीं। उनका लेखन स्पष्ट है और उनके तथ्य बोलते हैं। वह न तो सौंदर्य को झुठलाते हैं, न बुराई को छिपाते हैं। इसलिए उन्हें एक 'सच्चा दस्तावेज़' कहा जा सकता है।"

### 6.3.3 राज घरानों का इतिहास

संपूर्ण चीनी इतिहास-लेखन के संाह में सबसे प्रभावी तत्वों में से एक है 24 'प्रामाणिक इतिहासों' का संचयन। प्रत्येक 'प्रामाणिक इतिहास वृत्त' बुनियादी तौर पर एक विशेष राजवंश और उसके समय का इतिहास है जिसे उत्तरवर्ती राजवंशों ने लिखा। जैसा कि उल्लेख किया

जा चुका है पिछले राजवंश के इतिहास को संकलित करने में नए राजवंश की रुचि शाही सिंहासन पर अपने पदारोहण की वैधता सिद्ध करने की आवश्यकता की वजह से थी। लेकिन इस प्रक्रिया में जन साधारण और एक सभ्यता के ऐसे बेजोड़ ऐतिहासिक दस्तावेज़ की सृष्टि हुई जो अपने क्षेत्र में व्यापकता और संसक्ति के लिए पहचाना गया।

हालाँकि परंपरा और श्रृद्धा की दृष्टि से समा चिएन के ऐतिहासिक दस्तावेज़ प्रामाणिक इतिहास वृत्तों में पहले स्थान पर हैं पर यह केवल एक राजवंश का इतिहास नहीं है। पहली वास्तविक राजवंशीय इतिहास वृत्त पहली शताब्दी ईस्वी के इतिहासकार बान गु का रचनात्मक कार्य था जो उन्होंने अपने पिता बान जिआओ और अपनी बहन बान झाओं के साथ मिल कर लिखा। उत्तरवर्ती हान राजवंश के समय के बान गु ने थोड़ी-बहुत फेरबदल करके तत्वतः समा चिएन के प्रारूप का अनुसरण करते हुए भूतपूर्व हान राजवंश का इतिहास लिखने का प्रयत्न किया था। आरंभ में उनका कार्य आधिकारिक तौर पर अधिकृत नहीं हुआ। दरअसल, जब यह ख़बर मिली कि वह व्यक्तिगत रूप से इतिहास लिख रहे हैं तो सम्राट शियान जोंग ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। हालाँकि उनकी साहसी बहन ने जब उनकी ओर से अनुनय की और सम्राट को अधूरा लिखा हुआ प्रारूप पढ़ने के लिए उपलब्ध कराया, तब सम्राट ने उसके कार्य के महत्व को जाना और बान गु को उनका काम पूरा करने का आदेश दिया। बान गु ने वह इतिहास वृत्त 20 वर्षों में पूरा किया। उत्तरवर्ती राजवंशीय इतिहास वृत्त अधिकतर आधिकारिक रूप से मान्य होते थे।

तीसरी शताब्दी ईस्वी में हान राजवंश के पतन के बाद साम्राज्य कई बार निस्तेज हुआ और शाही सिंहासन के उत्तराधिकारी वंश हमेशा स्पष्ट नहीं रहे।

रोचक बात यह है कि चीन के इतिहास में फूट पड़ने के समय भी राजवंशीय इतिहास वृत्त लिखने की परंपरा उन विभिन्न शासन कालों में भी क़ायम रही जो सत्ता के लिए एक-दूसरे से मुकाबिला कर रहे थे, यही कारण है कि 24 मान्य प्रामाणिक इतिहास वृत्त मौजूद हैं। हालाँकि संयुक्त चीनी साम्राज्य में सत्ता में रह चुके राजवंशों की संख्या कहीं कम थी। 1911 में साम्राज्य के पूरी तरह ध्वस्त हो जाने के बाद आने वाली गणतांत्रिक सरकार ने भी प्रामाणिक इतिहास वृत्तों की परंपरा को जारी रखने का प्रयत्न किया और अंतिम ची राजवंश का इतिहास लिखवाया। हालाँकि यह लेखन उन 24 प्रामाणिक इतिहास वृत्तों जैसा नहीं माना गया है।

### 6.3.4 उत्तरवर्ती साम्राज्यिक काल

महान हान राजवंश के ध्वस्त होने के 350 से भी अधिक वर्षों के अंतराल के बाद 689 ईस्वी में सुइ राजशाही के संस्थापक सम्राट के नेतृत्व में चीन का एकीकरण हुआ। उसके बाद तांग राजशाही की समाप्ति के बाद 50 वर्षों तक चले युद्धकाल को छोड़कर (907 से 960 ईस्वी तक) चीनी साम्राज्य की एकता लगभग निरंतरता से कोई हज़ार वर्षों तक 20वीं शताब्दी तक कायम रही।

इसका असर चीन की इतिहास-लेखन परंपरा पर पड़ना स्वाभाविक ही था। इसके बाद के मुख्य इतिहास वृत्त लगभग एकरूपता से साम्राज्यवादी शासकों द्वारा अधिकृत किए गए। बड़ी संख्या में यह कार्य पृथक विद्वानों द्वारा नहीं किए गए बल्कि इतिहास-लेखन के शाही कार्यालय के तहत आयोजित इतिहासकारों के समूहों द्वारा किए गए। दरअसल इन्हें ऐतिहासिक सूचनाओं का आधिकारिक संचयन कहा जा सकता है। यह वृहत, व्यापक इतिहास वृत्तों का युग था जिसमें विभिन्न संस्थाओं के इतिहास कार्य विस्तार और व्यापकता पा सके और जिसने मानक इतिहास वृत्तों के प्रबंध खंड में इन विषयों के विवेचन को कहीं पीछे छोड़ दिया। अत्यंत व्यापक इतिहास वृत्तों ने विद्वानों और अधिकारियों की आवश्यकताओं की पूर्ति उस समय की जब राज्य की गतिविधियों के क्षेत्र और जटिलताएँ काफी हद तक बढ़ चुकी थीं। इस काल में

प्रशासनिक सेवा अफसरशाही के लिए एक मुख्य रास्ता था और उसकी प्रतियोगिता परीक्षाओं के बढ़ते हुए महत्व ने भी विद्वानों के लिए ऐसे कार्यों की उपयोगिता बढ़ाई जिनमें विषय विशेष पर सभी प्रासंगिक जानकारियाँ एक ही स्थान पर मौजूद थीं।

उत्तरवर्ती साम्राज्यिक काल में इतिहास पर किए गए अधिकांश कार्यों की नीरस और कुछ-कुछ आधिकारिक प्रवृत्ति के बावजूद तांग और विशेष रूप से सांग काल इतिहास-लेखन के क्षेत्र में बौद्धिक जिज्ञासा के काल भी रहे हैं। विद्वानों और बुद्धिजीवियों ने इतिहास-लेखन में कुछ रूढ़िवादिता और कठोरता को चुनौती देना और एक नया आधार बनाना चाहा।

चीन में पहला विवेचनात्मक इतिहास-लेखन कार्य तांग राजशाही के विद्वान लिउ झिजी का था। उन्होंने 'शी तांग' अर्थात 'इतिहास पर' नाम की पुस्तक लिखी जिसमें इस प्रश्न का स्पष्ट उत्तर दिया गया था कि इतिहास कैसा था और उसे कैसे लिखा जाना चाहिए। सुंग काल के महान् इतिहासकार समा गुआंग (1019-1086) ने ईमानदारी से यह प्रश्न सामने रखा कि इतिहास लिखते समय प्रमाणों में मतभेद की समस्या से कैसे निपटा जाए। उन्होंने हालाँकि साफ तौर पर राजवंशीय इतिहास प्रारूप को चुनौती नहीं दी लेकिन उसकी सीमाओं से वह अपनी पुस्तक 'जिझी तौंगजियान' (शासन की मदद के लिए बोध-आदर्श) लिखते समय किसी तरह निकल सके। इस महान कार्य ने 403 ई.पू. से 959 ईस्वी तक के चीन के 1362 वर्षों के इतिहास का कालक्रमिक ब्योरा उपलब्ध कराया और उत्तरवर्ती साम्राज्यिक काल का यह सबसे अधिक महत्व का प्रभावी कार्य साबित हुआ। अन्य इतिहासकारों ने भी इतिहास को राजवंशीय खंडों में विभाजित करने की उपयोगिता पर संदेह प्रकट किया और यह भी महसूस किया कि समा गुआंग ने इस चुनौती का सामना करने में अधिक सफलता हासिल नहीं की। इस अंतर को उन्होंने प्रासंगिक इतिहास तथा संस्थागत इतिहास लिखकर पूरा किया जिसमें राजवंशों पर आधारित रूढ़िगत कालानुक्रम का अनुसरण नहीं किया गया था।

सुंग काल में चीन में बौद्ध धर्म के स्वर्णिम काल के दौरान कन्फ्यूशसवाद को पहुँची आर्थिक हानि के बाद इसकी मर्यादा की वापसी देखी गई। इतिहासकार विशेष रूप से इतिहास के वास्तविक क्रम को समझने तथा इतिहास से ही सही नैतिक सीख ढूँढ निकालने के लिए प्रयत्नशील थे। बहुत ही अच्छी तरह से इसे लु ज़िचिएन ने लिखा हैः

> "अधिकतर लोग जब इतिहास की जाँच करते हैं तो साधारणतया विभिन्न कालों का क्रम देखते हैं और अनुभव करते हैं कि वे क्रम में हैं; वह विभिन्न कालों में अव्यवस्था देखते हैं और उनकी अव्यवस्था को भाँप लेते हैं; वह एक तथ्य देखते हैं और उस तथ्य के अलावा कुछ अधिक नहीं जान पाते। लेकिन क्या यही इतिहास का सही अवलोकन है? आपको अपने आप को वस्तुतः उस स्थिति में रखना चाहिए, फिर यह देखना चाहिए कि कौन सी बातें काम की हैं और कौन सी संकटपूर्ण और तब उस काल के दुर्भाग्य तथा बुराइयों पर ध्यान देना चाहिए। पुस्तक बंद कर अपने बारे में सोचिए। कल्पना कीजिए कि आप इन्हीं विभिन्न तथ्यों का सामना कर रहे हैं और अब निश्चय कीजिए कि आपके हिसाब से क्या किया जाना चाहिए। यदि आप इतिहास को इस प्रकार लेंगे तो आपका ज्ञान बढ़ेगा और समझ सुधरेगी। तब आप इसे पढ़ने का वास्तव में लाभ उठा पाएंगे।"

सुंग काल के बाद हम साम्राज्यवादी चीन के इतिहासकारों में बौद्धिक जिज्ञासा का यह विस्तार नहीं पाते। फिर भी सतर्कता और परिश्रम से इतिहास लिखने की परंपरा और ऐतिहासिक लेखनों का संचयन और वर्गीकरण जारी रहा। वर्तमान की समस्याएँ समझने और परखने और इन समस्याओं के उचित समाधानों तक पहुँचने में ऐतिहासिक अनुरूपता और इतिहास का इस्तेमाल चीन के विद्वानों और बुद्धिजीवियों के लिए आधुनिक काल तक मुख्य मुद्दा बना रहा।

## 6.4 इतिहास के सिद्धांत

इतिहास लिखने का कोई न कोई सैद्धांतिक ढ़ाँचा हमेशा से रहा है। यहाँ तक कि वह इतिहासकार भी जो पूरी तटस्थता का दावा करते हैं, अपने विषयों को व्यवस्थित करने के लिए सामान्य सिद्धांतों का सहारा लेते हैं। आधुनिक काल से पहले के चीन में इतिहास-लेखन भी इससे अछूता नहीं था। हम यहाँ पारंपरिक चीनी इतिहास-लेखन के कुछ सैद्धांतिक आधारों की चर्चा करेंगे।

### 6.4.1 वंशीय कालचक्र

पारंपरिक इतिहास-लेखन पर वंशीय कालचक्र की अवधारणा छाई हुई थी। चीनी परंपरा के अनुसार 'शिया' चीन का पहला शासक परिवार था जिसे शांग वंश ने पराजित किया और बाद में शांग वंश का तख्ता झाओ वंश ने पलटा इत्यादि। चीनी लोगों ने पाया कि वंशों के उत्थान-पतन का स्पष्ट रूप से एक निर्धारित ढाँचा था। वंशीय चक्र सिद्धांत पारंपरिक इतिहासकारों के लिए दो तरीकों से उपयोगी साबित हुआ। सबसे पहले इससे उन्हें उनके इतिहास को नियंत्रण योग्य खंडों में बाँटने में सहूलियत हुई। कुछ राजवंश 300 से अधिक वर्षों तक चले थे जबकि कुछ केवल कुछ ही दशक। दूसरे, और शायद अधिक महत्वपूर्ण तौर पर वंशीय चक्र इतिहास-लेखन के नीति संगत उद्देश्यों से भली-भाँति मेल खाता था। राजवंशों के उत्थान और पतन का श्रेय पृथक-पृथक शासकों के निजी नैतिक गुणों को दिया गया। निरपवाद रूप से किसी भी राजवंश के उस संस्थापक शासक या उन शासकों को अति बुद्धिमान तथा योग्य व्यक्तियों की तरह प्रस्तुत किया गया जिन्होंने अव्यवस्था समाप्त कर जन कल्याण के लिए आधार तैयार किया। उन अंतिम शासकों को कमज़ोर और निष्प्रभावी बताया गया जो आमोद-प्रमोद में डूबे रहते थे और जिन्होंने राज्य के काम-काज को दुर्व्यवस्था में बदलने दिया। इस प्रकार वर्तमान राजवंश का संस्थापक (जिसने पिछले राजवंश का इतिहास लिखने के लिए इतिहासकारों को काम दिया) सकारात्मक रूप से ऐसे व्यक्ति के तौर पर उभरा जिसने दुर्व्यवस्था और अधोगति को समाप्त किया। ऐसा माना जाता था कि उसे अपने अयोग्य पूर्ववर्ती शासक के बदले शासन करने का 'स्वर्गादेश' प्राप्त हुआ है और इस तरह यह चक्र चलता रहा। यह शासकों के लिए ऐसी चेतावनी थी कि वह अपने कर्तव्यों के प्रति ईमानदार रहें और शासन कला के लिए स्वीकृत परिपाटियों और नियमों का पालन करें जिससे उनके हाथ से कोई अन्य यह 'स्वर्गादेश' छीन न ले।

फ़ेयरबैंक के अनुसार, "चीनी इतिहास की बुनियादी गतिशीलता को समझने में राजवंशीय काल चक्र मुख्य बाधा" साबित हुआ। केवल अल्प कालिक परिवर्तनों पर ध्यान केंद्रित करने की प्रक्रिया में इसने चीनी समाज में हो रहे अधिक तात्कालिक तथा दीर्घकालिक परिवर्तनों को धुँधला कर दिया। इतिहास की दोहराए जाने की प्रवृत्ति पर बल देने से इसने वास्तविक परिवर्तनों की संभावना को नकार दिया तथा अस्पष्ट कर दिया। इसने विद्वानों तथा राजनेताओं को अतीत से बाँधे रखा जो वर्तमान की दुविधाओं को दूर करने के हल बीते हुए समय में खोजते रहे क्योंकि ऐसा माना जाता था कि हर वर्तमान समस्या के कुछ पूर्ववर्ती रूप पिछले युगों में रहे हैं।

इससे जकड़ने वाली मानसिकता पैदा होनी ही थी। विशेष रूप से उन्नीसवीं शताब्दी में जब चीन को आश्चर्यजनक रूप से नई और विकट समस्याओं का सामना करना पड़ा। वहीं फ़ेयरबैंक मानते हैं कि राजवंशीय चक्र की एक प्रकार की सीमित उपयोगिता थी, विशेष रूप से यह साबित करने में कि महान राजवंशों के दौरान प्रशासनिक और वित्तीय असमर्थताओं ने बार-बार विदेशियों की चुनौतियों के परस्पर प्रभाव में कैसे संकटपूर्ण स्थितियाँ, उथल-पुथल और विदेशी जीत का माहौल बनाया।

### 6.4.2 सतत् इतिहास

पारंपरिक चीन में भी राजवंशीय चक्रीय प्रारूप के आलोचक थे। जैसा कि पहले बताया जा चुका है, विशेषकर तांग और सुंग काल के दौरान इतिहासकारों ने इसकी सीमितता का विरोध किया और उससे बाहर निकलने के प्रयत्न किए। समा गुआंग की भाँति कुछ ने खुले आम राजवंशीय चक्रीय ढ़ाँचे को नहीं त्यागा पर उनके कार्य के दायरे में किसी एक वंश का उल्लेख रहा। झेंग चियाओ की तरह अन्य लोगों ने राजवंशीय इतिहास वृत्त लिखना आरंभ करने के लिए श्रद्धेय इतिहासकार बान गु की आलोचना की और 'सतत इतिहास' की अवधारणा का खुल कर समर्थन किया। युआन शू ने किसी एक विषय को लेकर उस पर 'शुरू से अंत' तक लिखने की शुरुआत की जिसमें उन्होंने राजवंशीय ढ़ाँचे द्वारा थोपी गई सीमाओं को नहीं माना। मा दुआनलिन ने यह सुझाते हुए समझौते की स्थिति बनाने की कोशिश की कि राजवंशीय ढ़ाँचे के संदर्भ में राजनीतिक इतिहास पर विचार करना सार्थक हो सकता है लेकिन यह तरीका संस्थाओं के इतिहास के लिए नहीं अपनाया जा सकता। उन्होंने लिखा कि

> "प्रत्येक काल खंड में संस्थाओं के प्रासंगिक महत्व और क्रमिक विकास के कारणों को समझने के लिए तुम्हें उनकी शुरुआत से लेकर अंत तक उनका व्यापक और तुलनात्मक अध्ययन करना चाहिए और इस प्रकार उनके विकास को समझने की कोशिश करनी चाहिए अन्यथा तुम्हें विकट कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा।"

सामान्यतः यह कहा जा सकता है कि बाद में लिखे गए इतिहासों में उनका तरीका अपनाया गया – राजनीतिक परिवर्तनों पर विचार करते समय कड़ाई से राजवंशीय सिद्धांत अपनाया गया, लेकिन संस्थागत इतिहास-लेखन के लिए अधिक व्यापक विवेचना की गई।

## 6.5 पारंपरिक चीनी इतिहास-लेखन की विशिष्टताएँ

जैसा कि हम देख सकते हैं कि चीनी इतिहास-लेखन पंरपरा में वह तत्व भी शामिल थे जो इतिहास-लेखन की अन्य महान परंपराओं के समान थे और वह घटक भी जो समाता से चीनी सभ्यता की विशिष्टताओं से निकटता से जुड़े हुए थे और बेजोड़ थे। हम इस परंपरा की मुख्य विशेषताओं का सार इस तरह प्रस्तुत कर सकते हैं।

### 6.5.1 आधिकारिक इतिहास

चीनी इतिहास-लेखन प्रमुख रूप से आधिकारिक इतिहास-लेखन था। इसमें कई बातें अंतर्निहित हैं। सबसे पहले यह केवल अधिकारियों द्वारा लिखा गया था। दूसरे यह आम तौर पर विशेष कर प्रारंभिक काल के बाद शासकों द्वारा अधिकृत या प्रायोजित होता था। कुछ अपवाद भी थे। लेकिन निजी इतिहास ने सदैव अस्तित्व में होते हुए और कुछ अहमियत प्राप्त करने के बाद भी राजकीय तौर पर लिखे गए इतिहास के प्रभुत्व को कभी चुनौती नहीं दी। तीसरे, इतिहास-लेखन के अधिकांश विषय प्रशासन के मामले दर्शाते थे और शासक तथा शासक वर्ग के मामले सीमित मात्रा में होते थे। चौथे, जिन मुख्य स्रोतों पर इतिहास-लेखन आधारित होता था, वह आधिकारिक दस्तावेज़ होते थे जो इतिहासकारों को आसानी से उपलब्ध हो जाया करते थे क्योंकि वह खुद ही अधिकारी होते थे। अन्य समाजों के लिए अति महत्वपूर्ण विषय जैसे भूमि दस्तावेज़, अराजकीय या गोपनीय अनुबंध, मुकदमों के ब्योरे आदि पारंपरिक चीनी इतिहासकारों द्वारा बिरले ही लिखे गए।

### 6.5.2 मानक इतिहास

इतिहास-लेखन तत्वतः मानकीय था अर्थात् जो इसे पढ़ते यह उन लोगों के लिए मार्गदर्शक जैसा होता। हम देख ही चुके हैं कि राजवंशीय चक्र प्रारूप परवर्ती शासकों के लिए यह संदेश

थी कि उन्हें कैसे शासन करना चाहिए। हालाँकि यह नसीहतें केवल सम्राटों के लिए ही नहीं थीं, प्रत्येक कर्तव्यनिष्ठ अधिकारी जब अपने क्षेत्र में किसी समस्या का सामना करता, जैसे उत्पाती विदेशियों से कैसे निपटें या अनाज को लाने-ले जाने की व्यवस्था कैसे करें या डकैती या विद्रोह को कैसे नियंत्रित करें तो उससे अपेक्षित था कि वह इतिहास में देखे कि उसके पूर्वाधिकारी ऐसी समस्याओं से कैसे निपटते थे। इतिहास ग्रंथों में केवल सूचनाएँ ही नहीं देखी जाती थी। इसमें पूर्व शासकों और अधिकारियों की कथनी और करनी में बुद्धिमत्ता, नैतिक ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा की मिसालें भी मिलती थीं, जो वर्तमान विद्वानों तथा अधिकारियों को प्रेरित कर सकती थीं और नसीहतें दे सकती थीं। कोई बुद्धिमान अधिकारी अपने उच्चांधिकारियों या सम्राट को पिछले उदाहरण दे कर अपनी कार्यवाहियों को न्यायसंगत भी ठहराने का प्रयत्न कर सकता था।

### 6.5.3 मानक प्रारूप

इतिहास के प्रमुख कार्यों में असाधारण तौर पर एक सुसंगत प्रारूप का अनुसरण किया गया है। सदियों से राजवंशीय इतिहास वृत्तों तथा 'व्यापक इतिहास वृत्तों' में समाता से एक जैसे खंड और उप खंड थे। इससे परवर्ती इतिहासकारों तथा विद्वानों को उनमें उपलब्ध जानकारियों की भूलभुलैया को समझना आसान किया। उदाहरण के लिए आज चीन के अतीत या किसी संस्था के किसी विशेष काल खंड पर शोध कर रहा कोई इतिहासकार संबद्ध खंडों तक आसानी से और जल्दी पहुँच सकता है।

### 6.5.4 वस्तुपरकता तथा सत्यनिष्ठा

महान इतिहासकार समा चिएन के समय से तथ्यों को जितना हो सके उतना वस्तुगत दृष्टि से दर्ज करना किसी भी इतिहासकार का कर्तव्य माना गया है। यह मानते हुए कि आधिकारिक तथा मानक इतिहास पर दिए गए ज़ोर से इतिहास-लेखन में वस्तुपरकता को समर्थन मिलने की अपेक्षा नही की जा सकती, पारंपरिक चीनी इतिहास-लेखन के विरोधाभासों में से यह एक है। फिर भी चार्ल्स गार्डनर जैसे आधिकारिक शोधकर्ता ने कहा है कि "इतिहास-लेखन की सभी चीनी अभिकल्पनाओं में संपूर्ण वस्तुपरकता की अवधारणा निहित है।" जो सामग्री इतिहासकार दर्ज कर रहा हो उसमें उसकी व्यक्तिगत विशिष्टताओं और विचारों को दखल देने की जगह नहीं होती थी। जहाँ देखा गया कि इतिहासकार ने अपनी तरह लिखने की कोशिश की है वहाँ प्रायः खुलासों, टिप्पणियों में उतने हिस्से को साफ़-साफ़ बाक़ी सामग्री की सीमा से बाहर कर दिया गया। इसके अलावा स्रोतों के प्रति ईमानदारी होने की आवश्यकता के कारण कई बार इतिहासकार अपने शब्दों में विषय को लिखने या उसकी व्याख्या करने के बजाय उस सामग्री के अंश बड़ी वफादारी से शब्दशः उतार लेते थे जिस पर उनका लेखन आधारित था।

इसे साहित्यिक चोरी का एक रूप समझना तो दूर, ऐतिहासिक पुनर्निर्माण का सबसे अधिक स्वाभाविक और तार्किक तरीका समझा जाता था। इस तरीके से मानक चीनी इतिहास-लेखन का रूप 'काटो और चिपकाओ' वाली शैली में बदल गया जो अक्सर मौलिक कार्य की बजाय पहले लिखी गई सामग्री का सावधानीपूर्वक किया गया रूपांतरण या संकलन जैसा दिखता था। 'काटो और चिपकाओ' शैली पढ़ना हालाँकि कभी-कभी अति विस्तृत और थकाने वाला काम होता था लेकिन इसका एक प्रमुख लाभ यह था कि चीन के इतिहास के प्रारंभिक दौर की कई रचनाएँ विशेषकर जो अब वर्तमान का हिस्सा नहीं हैं, अभी पूरी तरह खोई नहीं हैं क्योंकि ठीक-ठीक उद्धृत लंबे-लंबे खंड बाद में लिखी गई ऐतिहासिक रचनाओं में सुरक्षित मिल सकते हैं।

## 6.6 सारांश

अंत में हम कह सकते हैं कि साम्राज्यवादी चीन में इतिहासकार, विशेषकर महान हान इतिहासकारों के समय के बाद, इस बात को लेकर सचेत थे कि वह महान इतिहास-लेखन की परंपरा के अंग हैं। कभी-कभार प्रयोग करने की उनकी स्वतंत्रता नियंत्रित होती थी क्योंकि वे अपने पूज्यनीय पूर्ववर्तियों द्वारा निर्धारित प्रणाली को अपनाने के लिए बाध्य थे। लेकिन दूसरे अर्थ में यह अतीत के वस्तुतः असाधारण दस्तावेज़ के रूप में परिणत हुए जहाँ निरंतरता, सुसंगति और सामान्य विश्वसनीयता अन्य समाजों या सभ्यताओं से बिरले ही मेल खाती थी। चीनी या विदेशी मूल के सभी बड़े या छोटे राजवंश नैतिक रूप से परंपरा को बनाए रखने के लिए और इतिहास-लेखन परंपरा की निरंतरता में किसी तरह का क्रम भंग न करने के लिए बाध्य थे। इस बोध ने कि वह एक महान परंपरा के अंग हैं, चीन में इतिहासकारों और उनकी कला की प्रतिष्ठा को बढ़ाया।

इसने इतिहास और प्रतिष्ठित परंपरा में उससे जुड़े असाधारण महत्व के लिए सम्मान बनाने में खासा योगदान किया है।

## 6.7 प्रमुख राज घरानों के कालानुक्रम

| | |
|---|---|
| शाँग | सीए. 1751-1122 ईसा पूर्व |
| झू | 1122-221 ईसा पूर्व |
| पश्चिमी झू | 1122-771 ईसा पूर्व |
| पूर्वी झू | 770-256 ईसा पूर्व |
| वसंत एवं ग्रीष्म काल | 722-468 ईसा पूर्व |
| युद्धरत राज्यों का काल | 403-221 ईसा पूर्व |
| चिन | 221-203 ईसा पूर्व |
| (चीन का पहला एकीकरण) | |
| हान | 202 ईसा पूर्व - 220 ईस्वी |
| प्रथम हान | 202-9 ईस्वी |
| उत्तर हान | 23-220 ईस्वी |
| विघटन का काल | 220-589 ईस्वी |
| सुइ | 589-618 ईस्वी |
| ताँग | 618-906 ईस्वी |
| पाँच राज घराने | 907-960 ईस्वी |
| सुंग | 960-1279 ईस्वी |
| उत्तरी सुंग | 960-1126 ईस्वी |
| दक्षिणी सुंग | 1127-1179 ईस्वी |
| युआन (मंगोल) | 1260-1368 ईस्वी |
| मिंग | 1368-1644 ईस्वी |
| चिंग (मंचू) | 1644-1911 ईस्वी |

## 6.8 अभ्यास

1) कनफूशियसवाद ने प्राचीन चीन के इतिहास-लेखन को किस तरह प्रभावित किया?
2) पूर्व-आधुनिक चीन में इतिहास-लेखन के विकास की चर्चा कीजिए।
3) पूर्व-आधुनिक चीन में इतिहास-लेखन से जुड़े सिद्धांतों पर टिप्पणी लिखिए।
4) चीन के पारंपरिक इतिहास-लेखन के विशिष्ट गुण क्या हैं?

## 6.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

विलियम थियोडोर द बेरी (संकलन), *सोर्सेज़ ऑफ़ चाइनीज़ ट्रेडीशन*, खंड 1 (न्यूयॉर्क और लंदन, कोलम्बिया यूनिवर्सिटी प्रेस, 1960)।

चार्ल्स एस. गार्डनर, *चाइनीज़ ट्रेडीशनल हिस्टोरियोग्राफी* (केम्ब्रिज, मेसाचुसेट्स, हार्वर्ड युनिवर्सिटी प्रेस, 1961)।

जॉन किंग फ़ेयरबैंक एवं एडविन रेइशोएर, *ईस्ट एशियाः द ग्रेट ट्रेडीशन* (बोस्टन, हॉटन मिफिन कंपनी, 1958, 1960)।

एतिएन बालाज़, *चाइनीज़ सिविलाइजेशन एंड ब्यूरोक्रेसी* (न्यू हावेन, येल युनिवर्सिटी प्रेस, 1964)।

एंडीमिओन विल्किसन, *चाइनीज़ हिस्टरीः ए मेन्युअल* (केम्ब्रिज, मेसाचुसेट और लंदन, हार्वर्ड युनिवर्सिटी प्रेस, 2000)।

जे. मेस्किल (संपादित), *द पैटर्न्स ऑफ़ चाइनीज़ हिस्टरीः साइकिल, डेवलपमेंट, और स्टेगनेशन?* (बोस्टन, हीथ, 1965)।

# इकाई 7 प्राचीन भारत में इतिहास-लेखन की परंपराएँ

**इकाई की रूपरेखा**



## 7.1 प्रस्तावना

यह कहना बड़ा घिसा-पिटा लग सकता है कि इतिहास अतीत का अध्ययन है लेकिन इतिहास-लेखन की प्राचीन परंपराओं को समझने के लिए शायद यह याद करना उपयोगी होगा कि इतिहास की परिभाषाएँ समय के साथ बदलती रही हैं।

आज इतिहास की हमारी समझ के दायरे का काफ़ी विस्तार हुआ है। इतिहास को अब हम केवल राजा-महाराजाओं का ही इतिवृत्त नहीं समझते। इसके बजाय इतिहासकार पर्यावरण के इतिहास की पुनर्कल्पना करने के प्रयासों में, स्त्री-पुरुष संबंधों, सामाजिक श्रेणियों और उन वर्गों के इतिहास में रुचि लेते हैं जो हाशिये पर थे, अधीन थे और यहाँ तक कि उपेक्षित और नगण्य थे। इतिहासकार विभिन्न प्रक्रियाओं और उन क्षेत्रों में भी रुचि लेते हैं जो दायरे से बाहर के माने गए हैं। हम जिन्हें ऐतिहासिक रचनाएँ मानते हैं उनमें इन क्षेत्रों में से कई या तो कम या बिल्कुल भी स्थान नहीं पाते हैं। तब इन रचनाओं का केंद्र बिंदु क्या था?

जैसा कि हम जानते हैं इन रचनाओं में से कई रचनाएँ शासक वर्ग के उपयोग के लिए प्रायः शिक्षित लोगों जैसे ब्राह्मणों द्वारा लिखी गई। वह नए आकांक्षी उम्मीदवारों द्वारा दावों को वैध ठहराने और प्रमाणित करने के उद्देश्य से तैयार की गई थीं।

इन रचनाओं का उद्देश्य अधिक प्रतिष्ठित शासकों के दावों को सुदृढ़ करना भी था। इस प्रकार लेखकों और संरक्षकों दोनों की चिंताएँ कुछ-कुछ संकीर्ण दिखती हैं। इन गाथाओं में सामान्य औरतों और आदमियों सहित आबादी के एक विशाल वर्ग का उल्लेख बहुत कम है या एकदम नहीं है।

इन रचनाओं को उनकी सीमाओं के कारण अस्वीकार कर देना आसान और शायद प्रथानुसार भी लग सकता है। फिर भी यह बात याद रखने योग्य है कि इनके महत्व पर लगभग दो

शताब्दियों से चर्चा होती रही है और उन परंपराओं का समालोचनात्मक मूल्यांकन जिनके दायरे में यह रचनाएँ थी, अतीत की हमारी सोच को समृद्ध कर सकता है।

शुरू में औपनिवेशिक संदर्भ में विश्लेषण की आधुनिक प्रणाली का इस्तेमाल करते हुए इन रचनाओं को छानबीन के उद्देश्य से सामने रखा गया है। उन रचनाओं को जिनका अभिप्राय इतिहास (अक्षरशः 'जैसा वह था') और पुराण (प्राचीन) से था, उनकी तुलना रोम और यूनान में लिखे गए इतिहासों से की गई और उन्हें अपूर्ण पाया गया। यह रचनाएँ स्थानिक और कालानुक्रम के संदर्भ में विशेष रूप से अपूर्ण पाई गई जिसे किसी भी ऐतिहासिक रचना की न्यूनतम आवश्यकता समझा जाता है। तब इस बात पर अस्पष्ट रूप से और अक्सर स्पष्टतया बहस छिड़ जाती थी कि प्राचीन भारतीय और उनके वंशज उनके पश्चिमी प्रतिस्थानियों से बौद्धिकता में पीछे थे। स्पष्ट है कि इतिहास और अतीत की घटनाएँ बड़ी जटिलता से सत्ता की धारणाओं में उलझी हुई थीं।

जैसा कि संभावित था ऐसे सभी प्रयासों की प्रतिक्रिया हुई जो यह सुझाते थे कि भारतीय लोग इतिहास लिखने में सक्षम नहीं हैं और इसके फलस्वरूप ऐसे सभी पारंपरिक पाठों को ऐतिहासिक "तथ्यों" को समेटने वाले कह कर महत्वपूर्ण बताया गया जिनमें तनिक भी क्रमबद्धता प्रतीत होती थी।

इन प्रतिक्रियाओं का भी आलोचनात्मक परीक्षण हुआ और उन पर सवाल उठाए गए। ऐतिहासिक महत्व के प्राचीन पाठों और परंपराओं के विशिष्ट उदाहरणों का विश्लेषण करते समय इन संदर्भों और परिप्रेक्ष्यों का ध्यान रखना उपयोगी होगा।

## 7.2 प्रारंभिक 'इतिहास' : वैदिक दानस्तुतियाँ

यदि हम इतिहासवृत्तों को उन घटनाओं को दर्ज करना समझें जो उन्हें कालानुक्रम अनुसार रचने वालों के लिए महत्वपूर्ण थीं तो इनमें से कुछ प्रारंभिक उदाहरण ऋगवेद से हैं (दूसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व)। इनमें श्लोक हैं जिन्हें दानस्तुति कहा गया है (दान की प्रशंसा में)। यह स्तुतियाँ दान ग्रहण करने वालों ने लिखीं थी जो पुजारी थे और इनमें प्रायः दाता के नाम का उल्लेख मिलता है। उदाहरण के लिए एक नमूना देखिए। यह श्लोक ऋगवेद या अष्टम मंडल के दूसरे स्रोत से लिए गए हैं:

> यदु का पुत्र जो अनेक मवेशियों से समृद्ध है,
>
> बहुमूल्य संपत्ति का दान करने में दक्ष है।
>
> असंग के पुत्र स्वनद्रथ को हर प्रकार का सुख और आनन्द मिले,
>
> प्लायोग के पुत्र असंग ने औरों से बढ़ कर दस हज़ार गौवें दान कीं।
>
> मेरे पास उनके दस बैल हैं..

जैसा कि हम इस उदाहरण में देख सकते हैं, पाने वाला प्राप्त दान के लिए आभार प्रकट करता है और दाता के कल्याण के लिए प्रार्थना करता है। इस प्रकार के आभार या घोषणाएँ प्रमुख अनुष्ठानों जैसे 'अश्वमेध' आदि के अंग हुआ करते थे। अनुष्ठान के रूप में यज्ञाय अश्व को एक वर्ष के लिए भ्रमण करने के लिए खुला छोड़ दिया जाता था। इस दौरान एक ब्राह्मण पुजारी हर सुबह संरक्षक की उदारता की प्रशंसा के गीत गाता था और हर शाम एक क्षत्रिय उसकी शूरवीरता के कारनामों के प्रशस्ति गीत गाता था। बहुत संभव है कि कई कथाएँ जो बाद में पुराणों और महाकाव्यों में संकलित की गई, इस प्रकार की वर्णनात्मक पद्धतियों से विकसित हुई हों।

संभवतः इस पर विचार किया जाना चाहिए कि क्या दर्ज हो और क्यों? ऐसी प्रशस्तियों में ब्राह्मण या क्षत्रियों के दृष्टिकोण से जो कुछ भी सकारात्मक या वांछनीय समझा गया उसी को स्थान मिला। अन्य गतिविधियों या विफलताओं से नजर बचा ली गई और यहाँ तक कि उन्हें स्मृति से भी मिटा दिया गया। हमें ध्यान देना चाहिए कि मालिकों की उदारता और वीरता के स्मरण केवल साधारण और वस्तुपरक विवरण नहीं थे बल्कि उनका उद्देश्य राजाओं को उनसे की गई उम्मीदों पर खरे उतरने को सुनिश्चित करना था। इस तरह यह इतिहास राजाओं के संदर्भ से जुड़े थे।

## 7.3 क्या महाकाव्य ऐतिहासिक विवरण हैं?

पारंपरिक तौर पर महाभारत को इतिहास और रामायण को महाकाव्य माना जाता है। इनमें से प्रत्येक का एक लंबा और जटिल इतिहास है। महाकाव्यों की कथाओं के सार पहली सहस्राब्दी ईसा पूर्व की प्रारंभिक शताब्दियों में मिल सकते हैं लेकिन पाठ के रूप में यह काफ़ी बाद में चौथी-पाँचवीं शताब्दी ईस्वी) में लिखे गए। कई सदियों से इनमें परिवर्तन किए जा रहे हैं। उत्तरवर्ती वैदिक काल में कुरुओं और पांचालों का ज़िक्र सामान्यतः किया गया है (पहली सहस्राब्दी ईसा पूर्व का पूर्वार्ध)। महाकाव्य में उल्लिखित विशिष्ट पात्रों के संदर्भ वैदिक साहित्य में अपेक्षाकृत अपर्याप्त हैं जबकि यह दोनों वंशावलियाँ महाभारत में बहुत महत्वपूर्ण थीं। रामायण के कोसल और विदेह जैसे घटना स्थल और भी कम हैं और एक बार फिर महाकाव्य के प्रमुख पात्र उत्तरवर्ती वैदिक साहित्य में शायद ही मिलते हैं। पुरातात्विक उत्खनन और पर्यवेक्षण यह संकेत देते हैं कि महाभारत से जुड़े स्थल जैसे हस्तिनापुर और इंद्रप्रस्थ और रामायण से संबद्ध स्थल अयोध्या इस काल में छोटी प्राकनगरीय बस्तियाँ थीं।

महाकाव्यों में चित्रित घटनाओं की यथातथ्य ऐतिहासिकता प्रमाणित करना असंभव है। फिर भी पाठों का उनमें प्रयुक्त शैली के संदर्भ में विश्लेषण किया जा सकता है और किया भी गया है। महाभारत में चंद्रवंशीय तो रामायण में सूर्यवंशीय वंशावलियों का उल्लेख है। प्रारंभिक मध्यकाल (सातवीं शताब्दी ईस्वी) में कुछ शासक परिवारों की पीढ़ियाँ इन्हीं वंशावलियों से हैं। यह वंशावलियाँ वास्तविक नहीं भी हो सकती हैं लेकिन सामाजिक-राजनीतिक प्रक्रियाओं के बारे में सूचित करने के कारण यह महत्वपूर्ण हैं।

## 7.4 पौराणिक वंशावलियाँ और वह क्या दर्शाती हैं?

पहली सहस्राब्दि ईस्वी के मध्य तक पुराण नाम का अन्य प्रकार का साहित्य लिखा गया। महाकाव्यों की तरह पुराण के पूर्ववृत्त भी प्राचीन हैं और जैसा कि महाभारत के उदाहरण में 'सूत' कहलाने वाले एक सामाजिक समूह ने पुराणों में शामिल किए गए कुछ विवरणों की रचना, संकलन और प्रसार में स्पष्ट रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अक्सर 'सूत' लोगों को चारण माना जाता है। प्रारंभिक शासन में वे इतने महत्वपूर्ण थे कि उन्हें उत्तरवर्ती वैदिक पाठों में राजा के मुख्य समर्थकों या 'रत्नों' की श्रेणी में गिना जाता था। वे राजा के हरकारों की तरह काम करते थे, युद्ध में साथ रहते थे और राजा के महान कार्यों की गाथाएँ सुरक्षित रखते थे और उन्हें सुनाते भी थे। हालाँकि मनुस्मृति जैसे धर्मशास्त्रों में सूत निम्न हैसियत के लोग माने जाते थे। इससे यह पता चलता है कि समाज में कुछ लोग शायद ब्राह्मण, राजा के निकट रहने और राजकीय गाथाओं के वाहक बनने के लिए सूतों के दावों के विरोध में थे। जब महाकाव्य और पुराण अंततः लिख लिए गए तो सूतों के बजाए ब्राह्मणों को उनका रचियता माना गया।

पुराणों में हमें दो या तीन प्रकार की वंशावलियाँ मिलती हैं। पहली में संतों की वंशावली है। ऐसी वंशावलियाँ जो शायद ज्ञान के तर्कसंगत प्रसार की प्रमाण थीं, कुछ उपनिषदों और धर्मशास्त्रों

में भी मिलती है। अन्य वंशावलियाँ शासकों की हैं। यह दो श्रेणियों में विभाजित हैं। पहली में कलियुग के आरंभ होने से पहले के लोग तथा दूसरी में कलियुग के बाद के राजाओं का वर्णन है।

सूर्य तथा चंद्र वंशावलियों का वर्णन करने वाली पहली श्रेणी में महाकाव्यों के नायक शामिल हैं। दरअसल महाभारत का महत्वपूर्ण परिणाम गढ़ने वाले युद्ध को मानव इतिहास में संकट के लिए एक मोड़ चिह्नित करने वाला तथा पतन के युग की शुरुआत अर्थात कलियुग का आरंभ माना गया है। दूसरी श्रेणी के कुछ अधिक अमर शासकों की वंशावलियों की एक मजेदार विशेषता है। यह सभी वंशावलियाँ जो कुछ उदाहरणों में लगभग पाँचवीं सदी ईस्वी तक चलीं, भविष्यकाल में लिखी गई हैं। उदाहरण के लिए चौथी शताब्दी ईसा पूर्व से उत्तर भारत पर शासन करने वाले गुप्त शासकों के बारे में एक श्लोक का सार इस प्रकार हैः

> "गुप्त वंश में जन्मे राजा इन सभी क्षेत्रों पर शासन करेंगे जैसे गंगातट पर बसे प्रयाग (इलाहाबाद), साकेत (पूर्वी उत्तर प्रदेश) और मगध।"

यह वंशावलियाँ क्यों संकलित की गई और क्यों इनकी रचना इतनी असाधारण है? इस प्रश्न का उत्तर सरल नहीं है। बहुत संभव है कि अंतिम संकलन गुप्त शासन काल में किया गया हो क्योंकि कुछ अपवादों को छोड़कर परवर्ती शासकों के उल्लेख प्रायः नहीं किए गए हैं। क्या भविष्यकाल यह जताने के लिए अपनाया गया था कि शासकों का शासन करना नियत था और तब क्या यह वैधीकरण के लिए संभव एक रणनीति थी? यह संभव है कि इस बात से स्थायित्व का भ्रम पैदा हुआ हो जो एक अस्थिर राजनीतिक परिस्थिति में बहुत महत्वपूर्ण रहा हो। दिलचस्प बात यह है कि पौराणिक वंशावलियों में उल्लिखित कई राजाओं के बारे में सिक्कों और अभिलेखों जैसे अन्य स्रोतों से भी पता चलता है। इसी के साथ सभी नहीं पर कुछ राजा जो अन्य स्रोतों से जाने गए, इन वंशावलियों में भी स्थान पाते हैं। स्पष्टतया शासकों के नाम तथा उनके शासनकाल की अवधि दर्ज करने की परंपरा व्यापक रूप से प्रचलित थी और पौराणिक परंपरा में कुछ अंश तक व्यवस्थित थी।

यह कहा गया है कि कुछ ऐतिहासिक अवसरों में जब या तो सत्ता के लिए या उसे सुदृढ़ करने के प्रयास किए जाते थे तो उन स्थितियों में वंशावलियाँ विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाती थी। ऐसी स्थितियों में वंशावली विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाती है जब यह दावे कुछ-कुछ खोखले हों। वंशावली एकात्मता के आहवान में अंतर्निहित निरंतरता के दावे विशेष रूप से तब महत्वपूर्ण हो जाते हैं जब वह संचित पूँजी की तरह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को सौंपी गईं हों। इस संपत्ति में भूमि और अंततः राजशाही शामिल किए जा सकते हैं।

यह भी महत्वपूर्ण है कि इन वंशावलियों में बेदखली और शामिल किए जाने के सिद्धांतों पर ध्यान दिया जाए। हम यह परख सकते हैं कि सगोत्रता द्विपक्षीय है (अर्थात दोनों अभिभावकों से) या पितृवंशीय है या कुछ बिरले उदाहरणों में मातृवंशीय है । हम इन पाठों में छोटे और बड़े भाइयों के लिए निर्धारित किए गए पदों की जाँच भी कर सकते हैं। इस प्रकार वंशावली अक्सर सगोत्रता की उस किस्म के बारे में सूचनाएँ उपलब्ध कराती हैं जिनका मूल्यांकन किया जा चुका था।

यह स्पष्ट है कि यह वंशावलियाँ वास्तव में सही नहीं भी हो सकती हैं फिर भी जहाँ तक यह अतीत की चुनिंदा घटनाओं और पूर्वजों पर प्रकाश डालती हैं, यह हमें उन परिस्थितियों का अंदाजा लगाने का अवसर देती है जिनमें एक पौराणिक अतीत की कल्पना करने या गढ़ने की रणनीतियाँ आवश्यक रहीं होंगी।

## 7.5 राजसभा की परंपराएँ: प्रशस्तियाँ

अभी तक हम जिस साहित्य पर विचार कर रहे हैं उसमें अधिकाँश अपेक्षाकृत सरल संस्कृत में पद्य में लिखा गया है। संस्कृत की सीमित पहुँच होने के बावजूद पुराणों और महाकाव्यों में इस बात की व्यवस्था है कि यह स्त्रियों और शूद्रों सहित लोगों की सभी ऐसे श्रेणियों को सुनाए जा सकते हैं और संभवतः सुनाए जाते थे जो संस्कृत पाठों की पहुँच से बाहर थे। दूसरे शब्दों में, ऐसे कई 'इतिहास' थे जो सभी वर्गो को प्राप्य थे। इनका मकसद केवल अतीत के बारे में समझ पैदा कराना नहीं था बल्कि इन्हें संभवतः सामाजिक मानदंडों के बारे में सूचना प्रसारित करने के साधन की तरह भी देखा गया। एक तरह से यह दोनों उदेश्य सम्पूरक थे।

इसी समय पाठों की अन्य श्रेणियाँ भी थीं जो संभवतः अधिक सीमित एवं संभ्रांत पाठकों के लिए थीं। यह राजसभाओं से संबद्ध थे और पाठ को प्रभावशाली बनाने के लिए प्रायः अन्य तरकीबों के साथ-साथ रूपकों और उपमाओं के प्रचुर उपयोग के साथ अलंकृत संस्कृत में लिखे गए थे। इन पाठों के उदाहरण प्रशस्तियों या प्रशंसात्मक अभिलेखों और चरित्रों में भी मिलते हैं। प्रशस्तियों के कुछ प्रारंभिक उदाहरण प्राकृत में हैं लेकिन सबसे अच्छे ज्ञात उदाहरण संस्कृत में हैं। ऐसे अभिलेख चौथी शताब्दी ईसवी से मिलने शुरू हुए। यह अभिलेख अक्सर स्वतंत्र रूप से लिखे गए थे लेकिन यह अभिलेखों का अंग भी हो सकते हैं जिसमें राजकीय दाता की उदारता का कीर्तिमान अंकित हो।

संभवतः इन प्रशस्तियों में सबसे अधिक विख्यात समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति है जिसे इलाहाबाद स्तंभलेख भी कहा जाता है। यह प्रशस्ति एक अशोक स्तंभ पर अंकित है। इसकी रचना हरिसेन ने की थी जो अनेक पदों पर रहने के अलावा एक कुशल कवि थे। शासक कैसे अपने पिता द्वारा चुना गया, उसके कई महान कार्य, वह रणनीतियाँ जिनसे उसने सुदूर देशों के शासकों की निष्ठा को जीता, उसकी वीरोचित विशिष्टताएँ और असीम विद्वता का उल्लेख अभिलेख में किया गया है। संक्षेप में शासक को ऐसे प्रस्तुत किया गया है जो किसी भी चीज में पारंगत है। संभव है कि शासक के महान कार्यों में कुछ वर्णन वास्तविक हों। फिर भी इनमें काव्यात्मक अतिशयोक्ति के तत्व की उपस्थिति जरूरत से ज्यादा है। आइए इसे केवल एक उदाहरण के उल्लेख से जानें। शासक के शरीर का वर्णन करते हुए कहा गया है कि कुल्हाड़ों, तीरों, भालों, बरछों, कीलों, तलवारों, गदाओं, नेज़ों और अन्य अस्त्रों के प्रहार से उत्पन्न घावों से अलंकृत होकर उसका शरीर और भी मनोहर हो गया है। अलंकृत संस्कृत से गुँथा इस तरह का विस्तृत वर्णन संभवतः शासक वर्ग को प्रभावित करने के लिए किया जाता था। एक अन्य प्रसिद्ध प्रशस्ति सातवीं शताब्दी ईस्वी के चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय की है। इस प्रशस्ति को रचने वाले कवि रविकीर्ति ने अपने कौशल की तुलना कालिदास और भैरवी से की। इसमें उसकी सैन्य कारगुजारियों का वर्णन मिलता है जिसमें उत्तरी भारत के राजा को पराजित करना शामिल है। रविकीर्ति की रचना उस अभिलेख का हिस्सा है जिसमें यह भी वर्णित है कि कवि ने कैसे एक जैन शिक्षक को एक घर दान में दिया।

## 7.6 राजसभा की परंपराएँ : चरित

प्रधानतः राजसभाओं से संबद्ध लेखक की एक अन्य शैली चरित थी। चरित महान व्यक्तियों के जीवन और उनकी उपलब्धियों का ब्यौरा थे। चरितों के अधिकतर विद्यमान उदाहरण संस्कृत में हैं और प्रशस्तियों की तरह यह रचनाएँ भी अत्यंत अलंकृत शैली में लिखी गई हैं। इन पाठों का विस्तार देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि इनकी रचना पूर्णरूप से संभ्रांत वर्ग के लिए की गई थी। कुछ आश्चर्य की बात है कि प्रारंभिक चरितों में से एक बुद्ध चरित है जो अश्वघोष (पहली शताब्दी इसा पूर्व) द्वारा रचित है। सन्यासी जीवन का चित्रण का दावा करने

वाले कवि ने विस्तारपूर्वक राजसभाओं की विलासिता का और स्त्रियों का विस्तृत चित्रण किया है। यह संभव है कि इस रचना के जरिए कुषाण की राजसभा का चित्रण किया गया हो। चरितों में सबसे अधिक प्रसिद्ध चरित संभवतः हर्षचरित है जिसके रचयिता बाणभट्ट थे। यह हर्ष के शासन काल के प्रारंभिक वर्षों का वृतांत प्रस्तुत करती है। बाणभट्ट की रचना संस्कृत साहित्य में कुछ जटिलतम वाक्य प्रस्तुत करती है जो कलात्मकता से उस राजा की अनन्यता का वातावरण प्रदान करते हैं जिसका गुणगान किया गया हो। यहाँ दिया गया हर्ष के पाँवों का वर्णन इस शैली का एक उदाहरण है:

> "उसके पाँव लाल जैसे अवज्ञाकारी राजाओं पर कोप से हुए हों, और वे पराजित अधिपतियों के तमाम किरीटों पर माणिक्य की सी तेज लाल रोशनी प्रवाहित कर रहे थे और युद्ध के सभी प्रबल तेजस्वी व्यक्तियों के सूर्यास्त का कारण बने।"

चरितों के रचयिताओं ने अन्य कौशल भी अपनाए। हम देखते हैं कि पूर्वी भारत के पाल शासक रामपाल (11-12वीं शताब्दी ईस्वी) का कीर्तिगान करने वाले कवि संध्याकरनंदिन ने रामचरित्र की रचना इस प्रकार की कि उसके प्रत्येक पक्ष की व्याख्या या तो महाकाव्य के नायक के जीवन या फिर उसके संरक्षक के संदर्भ में की जा सकती थी।

इस बात की संभावना है कि प्रशस्ति और चरित दोनों ही उन स्थितियों में विशेष रूप से बहुमूल्य थे जिनमें शासक कुछ असुरक्षित थे। जिन चारों शासकों का यहाँ उल्लेख किया गया है उनके उदाहरणों में यह बात साफ है कि सिंहासन के लिए इनके दावे ज्येष्ठता के आधार पर नहीं टिके हुए थे। समुद्रगुप्त के बारे में हरिसेन कहते हैं कि उनके पिता ने प्रतिद्वंद्वियों के दावों की उपेक्षा करते हुए उनका चयन किया। पुलकेशिन अपने पूर्ववर्ती राजा का भतीजा था। हर्ष अपने बड़े भाई की अचानक मृत्यु हो जाने पर सिंहासन पर बैठे। सिंहासन के लिए कोई सीधा दावा नहीं था। संभवतः इन विस्तृत पाठों की संकल्पना किसी हद तक उन राजाओं को प्रतिष्ठित करने के लिए उपायों के रूप में की गई जो अन्यथा असुरक्षित होते ।

## 7.7 कवि इतिहासकार: कल्हण और राजतरंगिणी

अक्सर यह कहा जाता है कि प्राचीन भारत में रची गई एकमात्र ऐतिहासिक रचना राजतरंगिणी अर्थात राजाओं की नदी थी जिसके रचयिता थे कल्हण (12 वीं शताब्दी ईस्वी)। एक तरह से राजतरंगिणी में कश्मीर का आदियुगीन समुद्र से भूमि की सृष्टि का विवरण लिखा गया है। आठ पुस्तकें या तरंगे हैं और यह रचना पद्य में है।

पहली तीन तरंगों में कश्मीर का सातवीं शताब्दी ईस्वी तक का इतिहास है। चौथी से छठी तरंग में इससे आगे 11वीं शताब्दी तक का इतिहास है और अंतिम दो तरंगों (जो सबसे अधिक लंबी अर्थात विस्तृत हैं) में 12वीं शताब्दी का विवरण है। रोचक बात यह देखना है कि वृतांत का स्वर कैसे बदलता है। पहले खंड में रचयिता जो कि ब्राह्मण है और एक मंत्री का पुत्र है तथा संस्कृत का विद्वान है, एक तस्वीर बनाता है जो कि उसके दृष्टिकोण से एक आदर्श विश्व था जिसमें पुत्र अपने पिताओं के उत्तराधिकारी होते थे और जिसमें वर्ण तथा लैंगिक श्रेणी की परंपरा का कठोरता से पालन किया जाता था हालाँकि अगले दो खंडों में वे विस्तार से बताते है कि इन नियमों का उल्लंघन कैसे हुआ। कल्हण के अनुसार स्त्री-शासकों का होना किसी संत्रास जैसा थी। जैसा कि स्पष्ट है आजकल के कुछ पाठक भले ही उनके लेखन से सूचनाएँ प्राप्त करें लेकिन वह कल्हण के नज़रिए से सहमत नहीं होंगे।

कल्हण के लेखन को जो बात बेजोड़ बनाती है वह है उनका आरंभ में ही उन स्रोतों को बताना जिनकी मदद से वे आगे बढ़े। इनमें धर्मदाय से संबद्ध शासकीय या राजकीय उदघोषणाएँ, प्रशस्तियों या गुणगान तथा शास्त्र शामिल हैं।

> "धार्मिक स्थापनाओं और अनुदानों प्रशंसनीय शिलालेखों और लिखित दस्तावेजों से जुड़े पूर्व राजाओं के आदेशों की जाँच से सभी चिंतित करने वाली सभी त्रुटियों का समाधान हो जाता है।"

वह सत्याभास और कल्पना के बीच भेद को पहचानने का प्रयास करते हैं और भाग्य में होने वाले परिवर्तनों की व्याख्या भी प्रस्तुत करते है। यह अधिकांशतः नियति पर आधारित है जिसे लेखकों ने रहस्यमयी माना है।

प्रारंभिक रचयिताओं पर अपनी समीक्षा में कल्हण अत्यंत कटु हैं क्योंकि उनके अनुसार इस रचयिताओं की रचनाएँ त्रुटियों से भरी पड़ी थीं और उनमें शैली का अभाव था। दुर्भाग्यवश उनके पूर्ववर्तियों का कोई भी लेखन बच नहीं सका है इसलिए हमारे पास उनके दावों का मूल्यांकन करने का कोई जरिया नहीं है। उन्होंने स्वयं एक मिसाल रखी जिसका बाद के लेखकों ने अनुसरण किया ओर उनकी शैली को कश्मीर के सुल्तानों के समय तक जारी रखा।

कल्हण अपने आपको कवि मानते थे। उनके अनुसार आदर्शतः एक कवि को दिव्यदृष्टि सम्पन्न और हिंदू मान्यता के अनुसार सृष्टि रचने वाले प्रजापति के समान शक्तिशाली होना चाहिए। उन्होंने अपने लेखन को शिक्षात्मक पाठ की तरह देखा जो विशेष रूप से राजाओं को शिक्षित करने के लिए था। इनमें निष्पक्ष निर्णय देने और तटस्थता का भाव पैदा करने की कोशिश पर बल दिया गया है। इसके अलावा एक कवि की हैसियत से कल्हण ने संस्कृत भाषा की परंपरा की सीमा के भीतर जिसके अनुसार हर रचना में एक प्रमुख रस (भावना, भाव) होना चाहिए। जिस रस को उन्होंने महत्व दिया वह शांत रस था। हालाँकि ऐसे खंड भी हैं जिनमें युद्ध की विभिषिका और उसके बाद की तबाही का संजीव चित्रण किया गया है। रोचक बात यह है कि कल्हण की राजभाषा से स्पष्ट रूप में निकटता थी लेकिन वह दरबारी या राजसभा के कवि नहीं थे।

## 7.8 इतिहास-लेखन की अन्य परंपराएँ

जब इतिहास-लेखन की अधिकाँश परंपराएँ राजाओं से जुड़ी हुई थीं तब धार्मिक संस्थाओं के प्रभाव में अन्य परंपराए विकसित हुई। इनमें बौद्ध,जैन तथा हिंदू संस्थाएँ शामिल थीं। इनमें से प्राचीन बौद्ध परंपरा संभवतः आज सबसे अधिक जानी जाती है। बौद्ध परंपराएँ तीन बौद्ध परिषदों की सभाओं का उल्लेख करती हैं जिनमें प्राचीन बौद्ध सिद्धांत और शिक्षाएँ दर्ज की गई हैं। धीरे-धीरे जब मठीय व्यवस्था सुदृढ़ हुई तब अधिक व्यवस्थित विवरण रखे गए और कालानुक्रम पद्धति अर्थात वर्षों को बुद्ध की मृत्यु या महापरिनिर्वाण के संदर्भ में चिह्नित करने की पद्धति विकसित हुई। ऐसे विवरणों का रख रखाव संभवतः अधिक आवश्यक हो गया क्योंकि मठ समृद्ध संस्थाएँ बन चुकी थीं। मठों को गाँव भूमि और अन्य सामान तथा नकद राशि भी संरक्षकों तथा राजाओं से धर्मदाय के रूप में मिलती थी। ऐसे इतिहास श्रीलंका में सबसे अच्छी तरह से सुरक्षित रखे गए जहाँ शासन और मठों के बीच निकट का संबंध था। यह संबंध दीपवंश और महावंश जैसे इतिवृतों में दर्ज किए गए।

## 7.9 तिथि निर्धारण पद्धतियाँ

इतिहास में कालानुक्रम जानना आवश्यक है इसलिए इस संदर्भ में प्राचीन भारत में प्रयुक्त होने वाली तिथि निर्धारण पद्धतियों के प्रकारों की जाँच करना महत्व रखता है। कई शताब्दियों तक

प्रचलित रही और प्राचीनतम पद्धतियों में से एक पद्धति थी जिसमें शासन-वर्षों का प्रयोग किया जाता था। यह वह पद्धति थी जिसमें राजा शासन शुरू करने के वर्ष को पहला वर्ष मानते हुए अपने अपने शासन के वर्षों का हिसाब रखते थे। जैसे यही पद्धति मौर्य शासक अशोक ने अपनाई थी। अशोक ने अपने अभिषेक (पवित्र जल से स्नान) की तिथि को शासन का शुरुआती समय माना। हमें उनकी तेरहवीं प्रमुख राजाज्ञा के शिलालेख से मालूम होता है कि उन्होंने कलिंग पर धावा बोला।

इसके अलावा राजवंश आधारित युग विकसित किए गए थे। इस पद्धति का सबसे ज्ञात उदाहरण गुप्त काल से मिलता है। इसकी शुरुआत 320 ईस्वी से आँकी गई है। यह वो समय था जो पहले महत्वपूर्ण गुर्त शासक चंद्रगुप्त प्रथम के लिए निर्दिष्ट किया गया। रोचक बात यह है कि इस युग की गणना चंद्रगुप्त द्वितीय के समय से पूर्व प्रभाव से हुई अर्थात् जिस दिन से उसे शुरू होता था उसके 80 वर्ष बाद गणना आरंभ हुई। स्पष्ट है कि गुप्त राजाओं ने पकड़ मजबूत करने के बाद ही काल गणना आरंभ की और सत्ता पर अपने दावे को अतीत में उतनी दूर तक ले गए जहाँ तक संभव था।

विक्रम संवत् (58 शताब्दी ईसा पूर्व) और शक संवत् (78 शताब्दी ईस्वी) ऐसे अन्य युग हैं जो लगभग दो सहस्त्राब्दियों तक बने रहे। यह दोनों संवत् भी संभवतः राजसी मूल से हैं, लेकिन कौन से राजाओं से संबद्ध हैं इस पर सर्वसम्मति या तो कम है या एकदम नहीं है। विक्रम संवत् विशेषकर इस दृष्टिकोण से भ्रामक है कि प्राचीन भारत में कई राजाओं ने विक्रमादित्य (शब्दशः पराक्रम का सूर्य) नाम अपनाया और हमारे पास यह सुनिश्चित करने का कोई जरिया नहीं है कि इनमें से किसने आज के प्रचलित संवत् की शुरुआत की। शक संवत् की शुरुआत विवाद्य रूप से सबसे अधिक प्राख्यात कुषाण शासक कनिष्क के शासन काल से मानी जा सकती है। यहाँ यह याद रखना आवश्यक है कि कुषाण और शक दोनों ही मध्य एशिया के विभिन्न जनसमूह थे। जो संभव दिखता है वह यह कि शक शब्द विदेशियों के लिए एक जातिगत शब्द के रूप में और कुषाणों से शुरू होने वाले युग के रूप में प्रयुक्त किया जाने लगा।

## 7.10 सारांश

यह स्पष्ट है कि इतिहास का बोध, यदि हम इसे अतीत के बारे में जानकारी से लें, प्राचीन भारत में भलीभाँति विकसित था। काल की गणना करने की कई पद्धतियाँ थीं जो सामान्य रूप से प्रचलित थीं। ऐसे अभिलेख पूरे उपमहाद्वीप में पाए गए हैं। अभिलेखों और पाठ-विषयक परंपराओं से हम जान सके हैं कि अतीत के बारे में विशिष्ट वर्ग क्या सोचता था और लेखन के विशिष्ट कौशलों के जरिए उसका उपयोग तथा दुरुपयोग करने के प्रयास किस तरह करता था। इनमें उदार संरक्षक के नाम और कार्य दर्ज होते थे जैसे वैदिक दान स्तुतियों में। वंशावलियों की रचना भी राजनीतिक आवश्यकताओं के अनुसार हो सकती थी और बहुत ही मौलिक तरीकों से उनका विस्तार भी किया जा सकता था। इसके अतिरिक्त शासकों की हैसियत के दावे करने के लिए विशिष्ट विधाएँ भी विकसित की गई थीं, जैसा कि प्रशस्तियों और चरितों से स्पष्ट होता है। इसके अलावा अन्य परंपराएँ भी मौजूद थीं। कल्हण की राजतरंगिणी हालाँकि राजाओं के लिए और उनके बारे में थी फिर भी उसका तेवर और उसकी शैली अलग थी।

जब हम संभ्रांतेतर समूहों के इतिहासों की तलाश करते हैं तब हमें समस्याओं का सामना करना पडता है। यह कुछेक शिक्षित लोगों की नगण्य रुचियों का विषय था जिन्होंने कुछ लिखित परंपराएँ दर्ज कीं जिनका हमने परीक्षण किया। इस तरह इतिहास लेखन की समृद्ध लेकिन सीमित परंपराओं का हमें कुछ आभास होता है।

## 7.11 अभ्यास

1) निम्नलिखित पर टिप्पणियाँ लिखिएः

    क) वैदिक दान स्तुतियाँ

    ख) चरित

    ग) प्रशस्तियाँ

2) पौराणिक वंशावलियों की परंपरा की चर्चा कीजिए।

3) कल्हण कौन थे? उनके इतिहास संबंधी लेखन की चर्चा कीजिए।

4) प्राचीन भारत के विभिन्न राजवंशों द्वारा प्रयोग में लाई गई तिथि निर्धारण पद्धतियों पर टिप्पणी लिखिए।

## 7.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

वी.एस. पाठक, *एन्शियेंट हिस्टोरियन्स ऑफ इंडिया* (लंदन, एशिया पब्लिशिंग हाउस, 1963)।

सी.एच. फिलिप्स (संपादन), *हिस्टोरियन्स ऑफ इंडिया, पाकिस्तान एंड सीलोन,* (लंदन, ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी, (1961) (1967)।

रोमिला थापर, *कल्चरल पास्ट्सः एस्सेज़ इन अर्ली इंडियन हिस्टरी* (नई दिल्ली, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2000)।

ए.के. वार्डर, *एन इंट्रोडक्शन टू इंडियन हिस्टीरोग्राफी* (मुम्बई, 1972)।

# एम. ए. इतिहास

**पाठ्यक्रमों की सूची**

| पाठ्यक्रम कोड | पाठ्यक्रम का शीर्षक | क्रेडिट |
|---|---|---|
| एम.एच.आई.-01 | प्राचीन और मध्यकालीन समाज | 8 |
| एम.एच.आई.-02 | आधुनिक विश्व | 8 |
| एम.एच.आई.-03 | इतिहास-लेखन | 8 |
| एम.एच.आई.-04 | भारत की राजनीतिक संरचनाएं | 8 |
| एम.एच.आई.-05 | भारतीय अर्थव्यवस्था का इतिहास | 8 |
| एम.एच.आई.-06 | भारत में सामाजिक संरचनाओं का विकास | 8 |
| एम.एच.आई.-07 | भारत में धार्मिक चिंतन और आस्था | 8 |
| एम.एच.आई.-08 | भारत में पारिस्थितिकी और पर्यावरण का इतिहास | 8 |

## एम.एच.आई.- 3 : इतिहास-लेखन

**खंड-वार पाठ्यक्रम संरचना**

| | |
|---|---|
| खंड - 01 | इतिहास का परिचय |
| खंड - 02 | पूर्व-आधुनिक परंपराएँ-1 |
| खंड - 03 | पूर्व-आधुनिक परंपराएँ-2 |
| खंड - 04 | आधुनिक काल में इतिहास-लेखन की दृष्टियाँ-1 |
| खंड - 05 | आधुनिक काल में इतिहास-लेखन की दृष्टियाँ-2 |
| खंड - 06 | भारतीय इतिहास-लेखन की विभिन्न दृष्टियाँ और विषय-1 |
| खंड - 07 | भारतीय इतिहास-लेखन की विभिन्न दृष्टियाँ और विषय-2 |